OM -19- 2018 FINAL_Page 1 and 2 12/10/2018 9:30 AM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 अंक-19 जनवरी-I-2019 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 10.00

विश्व शांति दिवस - 18 जनवरी

रूहानियत से राहगीरों को दिखाई राहत भरी राह

जिस प्रकार पगडंडियों पर चलने वाला इंसान बिना किसी सहारे के लड़खड़ा जाता है, सहारा उसे चाहिए, चाहे वह हल्की रोशनी का ही हो! जीवन रूपी पगडंडी पर, सभी रूहों को सहारा दे, थामने वाला आफ़ताब, जो युवकों के लिए नवजीवन है, छोटे बच्चों के लिए रात को जगमगाते तारों के समान और बुज़ुर्गों के लिए सूरज की लालिमा लिए, सभी को एक जैसी रोशनी दिखाई। कहा, बच्चों! तुम इधर-उधर ना देख चरित्र की सीधी राह चलो, सभी नतमस्तक होंगे, उन्नति होगी, जिसमें शांति व सौहार्द होगा। ऐसे रूहानी नूर को इस अलौकिक जीवन के लिए कैसे धन्यवाद करें...!

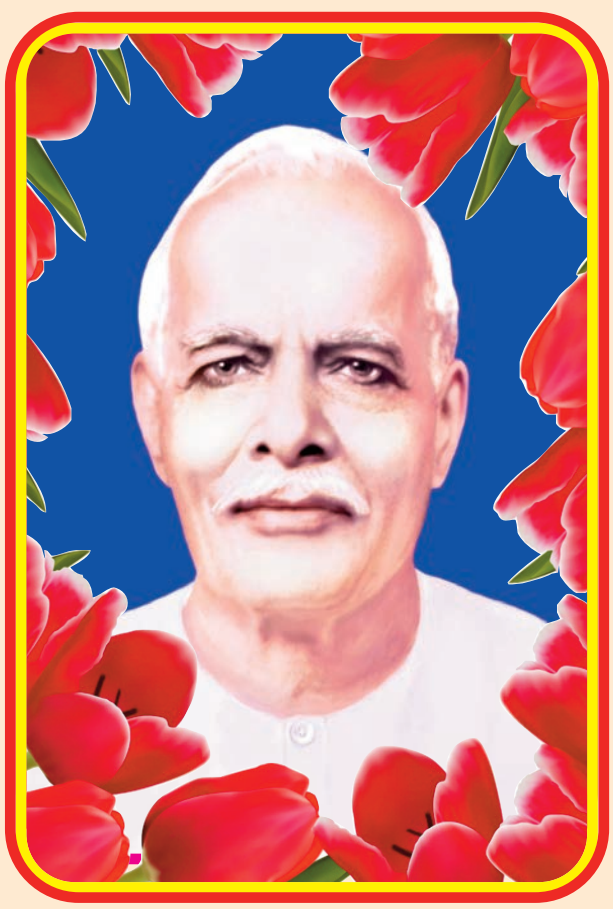

चार सुखों के आधार पर जीवन को सुखी जीवन मानने वाले सभी जनमानस की स्थिति आज शायद किसी से छुपी नहीं है। सभी तन, मन, धन व जन के बावजूद भी भय के वातावरण में हैं। ऐसे में हज़ारों, लाखों आत्माओं को ज्ञान का दिव्य नेत्र प्रदान कर उन्हें सच्ची शांति का मार्ग बता, भय के वातावरण से बाहर निकाल, नई दुनिया के निमित्त बनाया और अभी भी बना रहे हैं।

शिव की प्रदत्त शक्तियों द्वारा शक्तियों को पैदा कर उन्हें शांतिदूत बना, भिन्न-भन्न स्थानों के वातावरण को इतना अच्छा बना दिया कि हर कोई उन्हें अपना पिता कहता है। हर तरह से सुरक्षित, आज कोई यदि बहुत बड़े पद पर है तो उसे इतने बड़े सुरक्षा चक्र की आवश्यकता है, लेकिन यहां की बड़ी दादी, दीदी सभी बिना भय के कहीं भी आ जा सकते, कारण, सच्चा ज्ञान हमारा सुरक्षा कवच है, जो अभेद्य है। डर इसीलिए तो रहे हैं, कि सच्चाई को नहीं समझ रहे!

सृष्टि के निर्माण का आधार सूक्ष्म संकल्प है। और ब्रह्मा बाबा ने हमें सूक्ष्म संकल्प की गति को बहुत गहराई से समझाया और कहा कि सृष्टि के निर्माण में हमारे सूक्ष्म से सूक्ष्म संकल्प बहुत अधिक कार्य करते हैं। अब आपको चिंतन करना चाहिए कि हर दिन जब हम सोने जाते हैं तो किस चिंता में सोते, और वही चिंता, वही डर, वही फिकर लेकर उठते। फिर से उसी सृष्टि को रिपीट करते हैं। इससे आप देखिए कितनी बुरी सृष्टि हमारी बन गई है! इसे ठीक करने का तरीका - शेष पेज 7 पर...

बीमारियों का मुख्य कारण नेगेटिव वायब्रेशन्स

महेसाना-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अवसर पार्टी प्लॉट में आयोजित कार्यक्रम में 'इनर पीस' विषय पर सम्बोधित करते हुए जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा एवं विश्व विख्यात मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि हम सभी धन के साथ-साथ लोगों की दुआयें कमायें, तभी हम आंतरिक शान्ति व शक्ति प्राप्त कर पायेंगे। हमारे जीवन में वायब्रेशन्स का बहुत महत्व है। आज बढ़ती हुई बीमारियों का मुख्य कारण हमारे नेगेटिव वायब्रेशन्स हैं। जीवन को खुशहाल बनाने के लिए हमारी सोच को हमारे लिए भी और औरों के लिए भी महान बनाना होगा। आज का इंसान 'स्क्रीन' का आदी हो चुका है। इतना छोटा सा मोबाइल स्क्रीन हमारी आंतरिक शक्तियों को नष्ट करता है। वहीं स्क्रीन पर ज़्यादा समय बिताने वाला व्यक्ति एक दूसरे से दूर चला जा रहा है। जो हमारे जीवन में तनाव का कारण बन गया है। हम अपने अहंकार को त्याग कर आपसी सम्बंधों को बनाये रखें और उसमें पहले प्रारंभ स्वयं हो।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् उपमुख्यमंत्री माननीय नितिन भाई पटेल ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करके समाज को सुधारने का प्रशंसनीय कार्य कर रही है। उन्होंने आशा जताई कि अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वक्ता ब्र.कु. शिवानी के प्रवचनों से ज़रूर सभी अपने जीवन में लाभ प्राप्त करेंगे।

उपक्षेत्रीय संचालिका एवं ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा ब्र.कु. सरला ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि विज्ञान के साथ साथ आध्यात्मिकता की भी आवश्यकता है जो कि हमारी आंतरिक शक्तियों को जागृत करता है।

पूर्व सांसद जीवा भाई पटेल, डॉ. बनारसीलाल शाह,माउण्ट आबू एवं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम ने भी अपनी अपनी शुभकामनायें व्यक्त कीं।

छः हज़ार से अधिक लोगों के बीच मंचस्थ मेहमानों एवं शहर के प्रतिष्ठित एक सौ आठ मेहमानों द्वारा एक सौ आठ दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। साथ ही साथ सभी श्रोताओं ने भी अपने अपने मोबाइल की लाइट जलाकर दीप प्रज्वलन में साथ दिया और वातावरण को आल्हादित कर दिया। इस अवसर पर ड्रोन द्वारा पुष्प वर्षा कर सभी का अभिवादन किया गया। आरंभ में दो कुमारियों द्वारा सुंदर नृत्य की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. धारा ने किया।

माननीय उपमुख्यमंत्री नितिन पटेल सम्बोधित करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. शिवानी, डॉ. बनारसी, पूर्व सांसद जीवा पटेल व अन्य।

- **खुशहाली के लिए बदलें अपने सोचने का तरीका**
- **मेडिटेशन को जीवन का हिस्सा बनायें**
- **धन कमाने के साथ दुआयें भी कमायें**
- **मोबाइल का अधिक उपयोग करता शक्तियों को नष्ट**

न्याय प्रणाली में योग को प्रमुखता देनी ही होगी

न्यायविदों के लिए त्रिदिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

दीप प्रज्वलित करते ब्र.कु.लता, जस्टिस वी. ईश्वरैय्या, वरिष्ठ वकील आर. वेंकटरमानी, ब्र.कु.बृजमोहन, ब्र.कु.पुष्पा, ब्र.कु.सपना व अन्य।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ बेहतर विश्व के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। संस्था लव और लॉ का बहुत सुन्दर सन्तुलन रखना सिखाती है। उक्त विचार उच्च न्यायालय,आन्ध्र प्रदेश के पूर्व चीफ जस्टिस वी. ईश्वरैय्या ने ओ.आर.सी. में न्यायविदों के लिए आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में व्यक्त किये। खुशनुमा जीवन के लिए स्वयं की पहचान विषय पर उन्होंने कहा कि खुशी का असली स्रोत वास्तव में हमारे अंदर निहित है। भौतिकता की चकाचौंध में हम अपनी मौलिकता को भूल चुके हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था हमें उन मूल्यों की पहचान करा रही है। स्थाई सुख शांति प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक और नैतिक मूल्य जरूरी हैं।

सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील आर. वेंकटरमानी ने अपने संबोधन में कहा कि कानून बनाने से समस्यायें हल नहीं होती। कानून ऐसा होना चाहिए जो हमें जोड़े व समाज में खुशहाली लाए। ये तभी संभव है जब समाज में जागरुकता हो। आध्यात्मिक सशक्तिकरण ही जीवन को व्यवस्थित करने का मूल आधार है।

ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु. आशा ने कहा कि स्वयं की पहचान के लिए योग ही मुख्य आधार है। योग हमें स्वयं से जोड़ता है। योग चित्त की वृत्तियों को नियंत्रित करता है। साथ ही वो हमें ईश्वर के समीप ले जाता है। इसलिए यदि हम न्याय प्रणाली को सुदृढ़ बनाना चाहते हैं तो योग को प्रमुखता देनी होगी। ब्र.कु. पुष्पा ने कहा कि योग मन को सुमन बनाता है। योग के माध्यम से व्यक्ति सकारात्मक ऊर्जा से ओतप्रोत रहता है, जिससे आपराधिक गतिविधियों से वो दूर रहता है।

संस्था के अतिरिक्त सचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि खुशी हमें तब होती है जब हम किसी को देते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति दैवी संस्कृति रही है। प्रकृति की कोई भी चीज़ अपने लिए नहीं बनी है। हरेक का महत्व दूसरों को देने में है। इसी प्रकार मानव जीवन की सार्थकता दूसरों के काम आने में है। लेकिन वर्तमान समय इसका उल्टा हो रहा है, मानव देवता के बदले लेवता बन गया। यही मानव जीवन के दुःखों का असली कारण है।

कार्यक्रम मे बैंगलूरु उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश ए.एस. पच्चापुरे, ब्र.कु. विद्या, ब्र.कु. अमिता, ब्र.कु. राजेन्द्र, अमर सिंह, रबिन्द्र सिंह एवं वरिष्ठ वकील बाबूलाल ने भी अपने विचार रखे। ब्र.कु. बालमुकुन्द ने सभी का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. लता ने किया। कार्यक्रम में अनेक न्यायाधीश, वकील एवं न्यायविद उपस्थित रहे।

OM -19- 2018 FINAL_Page 1 and 2 12/10/2018 9:30 AM Page 2

इस असार संसार के सार ब्रह्मा बाबा

ब्रह्मा बाबा, जिनकी अव्यक्त पालना के अब 50 वर्ष हुए हैं, की प्रतिमा बहुमुखी थी। उनके व्यक्तित्व का एक विशेष पहलू यह था कि कोई बच्चा हो या बूढ़ा, धनवान हो या निर्धन, विद्वान हो या अशिक्षित, जल्दी ही उनकी निकटता का अनुभव करता था। हरेक को ऐसा अनुभव होता था कि बाबा के मुखारविन्द से जो शब्द विनिमृत हो रहे हैं, वे आत्मीयता और अपनत्व को लिए हुए हैं। उनमें औपचारिकता कम है, परंतु शिष्टता युक्त स्नेह अधिक। कितना भी कोई कमर कस कर उनके पास आता, वह उनके स्नेह ये घायल हुए बिना न लौटता। वह बाबा से दोबारा अथवा बार बार मिलने की इच्छा मन में लेकर जाता। बाबा का प्यार पत्थर को भी पिघलाकर पानी बना देता और तपत का ताप बुझाकर उसे शांति और शीतलता प्रदान करता। उनके पास बैठकर, उनसे मिलकर, उनके वचन सुनकर ऐस लगता है कि इस बेगाने संसार में हमने यहाँ ही अपनापन पाया है। एक यही जगह है जहाँ कृत्रिमता नहीं बल्कि वास्तविकता है और जिसके वचन हम सुन रहे हैं, उसके मन में एक ऐसा प्यार और दुलार है जो इस विशाल संसार में ढूंढ़ने पर भी अन्य कहीं नहीं मिल सकता। वह प्यार मन में इतना गहरा उतर जाता कि उसकी गहराई समुद्र से भी अधिक और उसकी छाप एक अमिट स्याही के ठप्पे की छाप से भी अधिक अमिट बन जाती।

- ब्र. कु. गंगाधर

उनके वचन एक ऐसा प्रसाद का रूप थे जो सचमुच मन की चंचलता को हर लेते और आत्मा में मिठास भर देते। इसी प्रसंग में दिल्ली के एक व्यक्ति के वृत्तांत का उल्लेख करना समुचित होगा। वह बाबा का कट्टर विरोधी था। उसका कारण यह था कि उसकी धर्मपत्नी ईश्वरीय सेवाकेन्द्र में आती थी और वह उस सपत्नीक जीवन में भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने में सुदृढ़ थी। वह व्यक्ति समझता था कि बाबा ने उससे कुछ छीन लिया है और उसको भोग सुख से वंचित किया है। अतः उसके मन में बाबा के प्रति घृणा, वैर, द्वेष और रूष्ट भाव था। एक बार जब बाबा दिल्ली में आये तो उसे मालूम हुआ कि जिस ईश्वरीय सेवाकेन्द्र पर उसकी धर्मपत्नी जाती है, वहाँ से एक बस प्रातः 4 से 4:30 बजे क्लास के भाई बहनों को लेकर वहाँ क्लास के लिए जाती है, जहाँ बाबा ठहरे हुए हैं। एक दिन ये सोचकर कि वह भी उस बस के द्वारा वहाँ पहुंचकर बाबा से झगड़ा करेगा, प्रातः ही अपनी धर्मपत्नी के पीछे पीछे आते हुए, धर्मपत्नी के मना करने पर भी केन्द्र पर पहुँचकर उस बस में बैठ गया। सभी ने बहुत प्रयत्न किये उसे क्लास में न ले जाने के और बाबा से दूर रखने के, क्योंकि सभी उसके स्वभाव से वाकिफ थे, लेकिन लाख कोशिशों के बावजूद भी वह क्लास में आ ही गया।

वह वहाँ क्लास के अंत में जाकर बैठा परंतु बैठने के बाद वहाँ से हिला नहीं। क्लास के सारे समय उसने गर्दन भी नहीं हिलाई। वह बाबा को एकटक होकर देखता ही रहा और सुनते सुनते मंत्रमुग्ध हो गया। क्लास के बाद जब उसे उठने के लिए कहा गया तब वह उठता ही नहीं था। उसकी आँखें गीली थी कि आँसू टपकने को आ रहे थे। बाबा से लड़ने की बजाय वह अपनी पत्नी को उलाहना देने लगा। वह बोला, बाबा तो अस्सी साल का जवान है! कितना खूबसूरत है बाबा! कैसे सीधे बैठते हैं! तू अब तक पवित्रता की बात मुझसे कहती रही और ऐसे बाबा के बारे में तो कुछ बताया ही नहीं। मैं बाबा से मिलकर आऊंगा। वह टोली लेने के लिए बाबा की ओर बढ़ा, बाबा ने उसे पुचकारते और मुस्कुराते हुए टोली दी और वह ऐसा खुश हो गया कि जैसे उसे भी अपना बाबा मिल गया।

इसके अलावा बाबा की विशेषताओं में से एक विशेषता थी कि वे ज्ञान को सम्पूर्णता से समझने और समझाने के प्रयत्न केवल लिखित सामग्री ही के द्वारा नहीं करते थे, बल्कि जब कहीं सम्मेलन या प्रवचन आदि होता, उसमें भी बाबा तीन प्रकार की सम्पूर्णता की ओर ले जाने का सदा विशेष प्रयास कराते रहते। एक तो बाबा इस ओर ध्यान खिंचवाते कि वक्ता की अपनी स्थिति पवित्र और योग युक्त होनी चाहिए। इसे वे यों समझाते कि जैसे तलवार में जौहर होना ज़रूरी है, ऐसे ही पवित्रता और योग युक्त स्थिति ज्ञान रूपी तलवार का जौहर है। दूसरा वे इस ओर ध्यान खिंचवाते कि प्रवचन में कौन कौन सी बात बताना ज़रूरी है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए वे समझाते कि जैसे कोई अच्छा वकील ऐसा नुक्ता बता देता है कि जिससे बात जज की समझ में आ जाती है और जो जज पहले फांसी की सजा देने की बात सोच रहा था, वह अब अपराधी को मुक्त करने का निर्णय करता है। वैसे ही ज्ञानवान व्यक्ति को भी ऐसी ऐसी बात सुनानी चाहिए कि पापी, पतित या अपराधी व्यक्ति की बुद्धि में वह ऐसी बैठ जाए कि पहले जहाँ वह भोग विलास के जीवन की ओर प्रवृत्त था अब वह उससे मुक्त होने की बात का निर्णय करे। बाबा कहते कि वकील को अगर समय पर प्वाइंट याद नहीं आयेगी और वो जज के आगे कुछ नहीं रखेगा तो अपराधी अपना मुकदमा हार जाएगा और दण्ड का भागी होगा। यहाँ तक कि हो सकता है उसे मृत्युदंड भी भोगना पड़े। अर्थात् वकील की छोटी सी गफलत से कितना नुकसान हो सकता है। इसी प्रकार ज्ञानवान प्रवक्ता अगर भाषण के समय आवश्यक बातें कहना भूल जाता है तो सुनने वाले लोग विषय विकारों में गोता लगाए दुःख दंड के भागी बनते रहते हैं। तीसरा वे इस बात की ओर ध्यान दिलाते कि बात समझाने की विधि क्या हो। केवल बात ही ज़रूरी नहीं होती, बात करने का तरीका भी महत्वपूर्ण होता है। बात कहना भी एक कला है। उस पर ध्यान देना, उसका अभ्यास करना, उसमें सम्पूर्णता लाना भी ज़रूरी है। इस बात को समझाते हुए वे कहते कि डॉक्टर जब किसी को टिंक्चर आयोडीन लगाता है तब वह उसे साथ साथ सहलाता भी है, फूंक भी मारता है। जब कोई सर्जन किसी का ऑपरेशन करता है तो वह उसे क्लोरोफॉर्म सूंघाता है ताकि उसे दर्द न हो। जब कोई इंजेक्शन लगाता है, तब वह पहले सूई को उबलते पानी में डाल कर कीटाणु रहित और संक्रमण रहित करता है। इस प्रकार बाबा समझाते - दूसरों को सम्मान देते हुए तथा स्नेह और मर्यादा युक्त, शुभ और कल्याण की भावना से, अनुभव, निश्चय और ओज की भाषा से समझाना चाहिए। तब जाकर वह तीर ठिकाने पर लगता है। इस प्रकार बाबा हर प्रकार से ज्ञान एवं योग के महत्व को समझाते थे। ऐसे बाबा को भूलना संभव नहीं।

वह दिन दूर नहीं जब समस्त विश्व उन्हें जगतपिता स्वीकारेगा

जैसे हीरों को केवल जौहरी ही परख सकता है। अन्य कोई नहीं, वैसे ही महान आत्माओं की महानताओं की परख कुछ सूक्ष्म दृष्टि वाले ही कर सकते हैं, क्योंकि महान आत्माएं अपनी महानताओं का उल्लेख स्वयं नहीं करतीं और परखने के बाद उन महानताओं से अपने जीवन का श्रृंगार करने वाले और भी कम होते हैं। प्रारम्भ से ही पिता श्री ब्रह्मा की महानताओं की ओर मेरी सूक्ष्म दृष्टि रही। मेरी यह श्रेष्ठ आकांक्षा थी कि बाबा से सबकुछ प्राप्त कर लूँ। मैंने देखा कि वे एक सच्चे पिता थे। उनसे सभी को पिता-पन का आभास होता था। हम उनके द्वारा ईश्वरीय ज्ञान सुनकर उत्पन्न हुए, इसलिए हम उनकी मुख सन्तान कहलाये। उनके अव्यक्त होने के बाद जो उनके बच्चे बने, उनके लिए बाबा प्रजापिता है और जो उन्हें अन्त में पहचानेंगे, वे उन्हें जगतपिता कहेंगे। हमें महसूस होता है कि थोड़े ही समय में समस्त विश्व उन्हें जगतपिता मानेगा अपने अनुभवों के आधार पर। मुझे उनसे बार-बार प्रेरणाएं मिली हैं कि जैसी भासना हमें बाबा ने दी वैसी ही भासना हम दूसरों को दें। जैसे बाबा ने हमें पालकर बड़ा किया, वैसे ही हम दूसरों को पालना दें। भले ही हम जगत पिता तो नहीं हैं, परन्तु हैं तो उन्हें फॉलो करने वाले उनके ही महान बच्चे।

दूसरी मुख्य बात - मैंने देखा कि बाबा में तनिक भी कर्तापन का भान नहीं था। बाबा सदा कहते थे कि सब कुछ शिव बाबा ही करता है या बच्चे करते हैं। अपने को सदा ही छुपाये रखना व बच्चों को स्वमान देना - यही मानवता हमने बाबा से सीखी। मुझे इस बात का सदा ख्याल रहता है कि कर्तापन का तनिक भी भान न आये।

हमें बाबा ने सिखाया कि शिव बाबा से ईमानदार कैसे रहना चाहिए। सम्पूर्ण सम्पत्ति का चाहे वह उनकी स्वयं की थी या अन्य आत्माओं ने यज्ञ में दी थी वे उसके सम्पूर्ण ट्रस्टी थे। यही विशेषता उन्होंने हमें सिखाई। इसी ईमानदारी से हमारा सारा व्यवहार सरल हो गया। हम भगवान के समीप आ गये और हमारी अधीनता भी समाप्त हो गई।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

मैंने ज्ञान मंथन करने की मुख्य विशेषता बाबा से सीखी। शिवबाबा के ज्ञान पर मंथन कैसे करें ताकि अपनी बुद्धि का ज़रा भी अंहकार न रहे, यह बात बाबा में प्रत्यक्ष देखी।

बाबा ने हमें सिखाया कि आपस में अलौकिक वातावरण कैसे होता है, अलौकिक भाषा कैसी होती है तथा अलौकिक सम्बन्ध कैसा होता है। जब भी बाबा के पास जाते, ये तीनों बातें स्पष्ट देखने में आती थी। बाबा के पास किसी भी तरह की लौकिकता नज़र नहीं आती थी। वास्तव में लौकिकता से दिव्यता मिस हो जाती है।

बाबा ने हमें सिखाया है कि हम संसार में कैसे, शिवबाबा से कैसे रहें, अपने से कैसे रहें, अपने को कैसे रखें, अपना स्वमान कैसे रखें। रूहानियत भी हो तो नारायणी नशा भी हो।

बाबा को सदा ही हमने पूरी अथॉरिटी में देखा। परिस्थितियों में बाबा कहते थे कि तुम डरो नहीं। सब बाबा के ही बच्चे हैं। इस प्रकार बाबा ने हमें अति निर्भय बना दिया। बाबा अपनी एनर्जी वेस्ट नहीं होने देते थे। सदा यही संकल्प रखते थे कि मेरी एनर्जी सभी को मिलती रहे। बाबा अन्दर ही अन्दर शिवबाबा से एनर्जी खींचते रहते थे। मुझे कभी-कभी सोलह-सोलह घण्टे भी कार्यक्रमों में रहना पड़ता है, परन्तु मुझे नहीं लगता है कि मेरी एनर्जी नष्ट हो रही है। सदा शक्ति बढ़ने का ही अनुभव रहता है। इसी तरह जब मैं किसी बड़े प्रोग्राम में होती हूँ, तो मुझे कभी हीन भावना नहीं आती। टॉपिक चाहे कैसा भी हो, जब तक दूसरे वक्ता भाषण करते हैं, मैं योग युक्त होकर साइलेंस की शक्ति इकट्ठी करती रहती हूँ। यद्यपि मैं उनकी भाषा नहीं समझती, तो भी मुझे ये ख्याल नहीं आते कि इन्होंने क्या बोला या मैं अच्छा बोलूं, पता नहीं उन्हें अच्छा लगेगा या नहीं। मुझे इस तरह की कोई भी उलझन नहीं होती। मैं अपनी श्रेष्ठ स्थिति में रहती हूँ और सब कुछ श्रेष्ठ होता है। सेवा के लिए बाबा ने हमें बहुत कुछ सिखाया। समानता में रहने का बीज डाल दिया, हिम्मत से भरपूर कर दिया, आध्यात्मिक शक्ति भर दी जो कि आज विश्व की सेवा में काम आ रही है। आज दुनिया में अनेक आत्माएं सत्य की प्यासी हैं, हमें रहता है कि इन्हें कुछ दें।

सेवा में मैं निमित्त बनी हुई आत्माओं का अधिक ध्यान रखती हूँ, यही बाबा से सीखा है। मैं ही करूँ, यह संकल्प कम रहता है। बाबा ने कूट-कूट कर भर दिया है कि सेवा में अनासक्त वृत्ति ही सफलता का आधार है। जो हुआ वो भी याद नहीं, जो होगा उसकी भी चिन्ता नहीं। सेवा के लिए मन में उलझन नहीं, उमंग अवश्य है। संशय भी नहीं रहता कि सफलता होगी या नहीं।

मुझे कभी फल देखने की इच्छा नहीं होती कि हमने जो सेवा की, उसका फल क्या निकला। बाबा ने सिखा दिया कि डाला हुआ बीज कभी निष्फल नहीं जाता। सार में मैं कहूँ, न कोई इच्छा है, न मैं भारी हूँ। प्रोग्राम बनें, यह इच्छा नहीं, और बने तो कोई भारीपन नहीं। हम कर ही नहीं रहे हैं, वही करा रहा है, अतः महिमा उसी की करो।

मैं तो यही कहूंगी कि भगवान के दर पर कोई भी अभिमान नहीं रख सकता, बाबा ने अपनी निर्माणता से हमें यही सिखाया। यहाँ पर तो बाप समान निमित्त व निर्माण व्यक्ति ही ज़िन्दा रह सकता है अर्थात् सफल होता है। तो बाबा के स्मृति दिवस, अर्थात् अठारह जनवरी का दिन ज्यों-ज्यों समीप आता है, बाबा का सम्पूर्ण चित्र सामने स्पष्ट हो जाता है। उनका प्यार श्रेष्ठ प्रेरणाएं देता रहता है। ऐसे सच्चे पिता पर ये मन कुर्बान है।

ब्रह्मा समान बनने का फाउण्डेशन - निश्चयबुद्धि

बाबा को हम सबने दिल से कहा कि बाबा, हमें आप जैसा बनना ही है। बनना ही है - यही आवाज़ है हम सभी की। बनेंगे, देखेंगे, सोचेंगे, पता नहीं बन सकेंगे या नहीं बन सकेंगे, ऐसा तो नहीं! जिसमें दृढ़ता है, वो बनेंगे ज़रूर, क्योंकि दृढ़ता सफलता की चाबी है। बाबा ने हम सबको ऐसी चाबी दी है, भले उसे जादू की चाबी कहो। अगर दृढ़ता है तो सफलता है ही।

साक्षात्कारमूर्त तब बनेंगे जब साक्षात बाप समान बनेंगे। तो आप देखो, बाबा की सबसे पहली पहली विशेषता क्या रही? ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा ने टच किया और ब्रह्मा बाबा ने उस संकल्प में थोड़ा भी संशय नहीं लाया। क्या होगा, कैसे होगा, मैं सबकुछ छोड़ तो दूं लेकिन आगे स्थापना कर सकूंगा या नहीं कर सकूंगा? नयी बात थी ना! दुनिया में द्वापर से लेकर अभी कलियुग तक जो बात किसी ने नहीं कही थी कि प्रवृत्ति में रहकर भी आप निर्विकारी रह सकते हैं, पवित्र रह सकते हैं। अभी तक भी इतने साधु, सन्त, महात्मा, मंडलेश्वर जो भी हैं, वे भी विश्वास नहीं करते हैं कि आग और कपास साथ में हों और आग नहीं लगे। ये हो ही नहीं सकता - वे ये शब्द बोलते हैं, लेकिन बाबा के प्रवृत्ति में रहने वाले बच्चे बोलते हैं कि आग और कपास साथ हैं तो भी अपवित्रता की आग नहीं लग सकती।

शुरू शुरू में सिंध हैदराबाद में माताओं-बहनों के पवित्रता अपनाने के कारण बहुत विघ्न पड़े। बाबा को पंचायत में बुलाया गया। पंचों ने बाबा से कहा कि तुम इन्हें पवित्रता के बारे में मत बताओ। तो बाबा ने कहा कि मैं यह वायदा नहीं कर सकता और इन्हें भी कह नहीं सकता क्योंकि शिव बाबा ने मुझे यही आज्ञा दी है कि तुमको पवित्र बनकर, पवित्र दुनिया की स्थापना करनी है। इस ईश्वरीय ज्ञान का फाउण्डेशन ही यही है और मैं कहूँ कि पवित्र नहीं बनो तो पवित्र दुनिया स्थापन होगी कैसे? मैं यह नहीं कह सकता हूँ। मुझे शिव बाबा का डायरेक्शन है, मैं उसको टाल नहीं सकता। ऐसा निश्चय है! इतनी हिम्मत चाहिए ना!

बाबा को ज़रा भी संशय नहीं आया। बाबा इतना बड़ा जौहरी था। जब सबकुछ यज्ञ में समर्पित कर दिया तो कभी सोचा कि मेरे परिवार का क्या होगा? मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा? मेरा इतना बड़ा परिवार है, सब कुछ समर्पण कर दिया तो वे भूखे तो नहीं मरेंगे! ऐसा कुछ भी नहीं सोचा। उनमें यही लगन थी कि बाबा जो कहता है मुझे वैसा ही करना है। इसको कहा जाता है निश्चय। आपके आगे एग्ज़ाम्पल है। आज इतना बड़ा पवित्र प्रवृत्ति वाला ब्राह्मण परिवार है। लेकिन उस समय ब्रह्मा बाबा अकेला था, उनके आगे कोई दृष्टांत, एग्ज़ाम्पल नहीं था। नयी बात थी। इतनी नयी बात कि लोग असम्भव मानते थे। उस असम्भव को बाबा ने सम्भव बनाकर दिखाया। संकल्प मात्र में भी, स्वप्न मात्र में भी बाबा को संशय नहीं आया। इसको कहते हैं बाप समान। बाप समान बनना माना साक्षात बाबा बनना। तभी हम साक्षात्कारमूर्त बन सकते हैं।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

ब्रह्मा बाप समान बनने के लिए पहला फाउण्डेशन है निश्चयबुद्धि। अपने आपसे पूछो, हम बाप समान निश्चयबुद्धि हैं? सिर्फ बाबा में निश्चय नहीं। बाबा से हमारा प्यार बहुत है। बाबा के लिए हम कुछ भी करने के लिए तैयार हैं। बाबा कुछ भी कहें, हम कर लेंगे। लेकिन बाबा कहते हैं कि कोई भी चीज़ अगर हिलती है तो आप चारो तरफ से बिल्कुल टाइट करेंगे ताकि हिले नहीं। हिलेगी नहीं तो टूटेगी नहीं।

इसी रीति से बाप समान बनना है तो आपको भी चारो तरफ का निश्चय चाहिए। बाबा पर, स्वयं पर, ड्रामा पर और ब्राह्मण परिवार में निश्चय पक्का हो। निश्चय के आधार पर ही विजय माला का मणका बनेंगे।

OM -19- 2018 FINAL_Page 1 and 2 12/10/2018 9:30 AM Page 3

इन आँखों ने देखा नया जहान बनाते

अव्यक्त पालना के अविस्मरणीय 50 वर्ष (एक अद्भुत स्वर्ण काल)

इन आँखों ने देखा शिव को नया जहान बनाते, भूमण्डल पर आ रूहों को अमृत पान कराते। सृष्टि चक्र में सतयुग से कलियुग तक मनुष्य ने अनेक दृश्य देखे। कभी वह देवी देवताओं के आँचल में खेला, तो कभी उनके पूजन में मग्न रहा। कभी उसने सम्पूर्ण सुखमय स्वर्ण काल निहारा, तो कभी वसुन्धर पर रक्त सरिता बहते देखा। कभी उसने समस्त विश्व पर शासन किया तो कभी भारत में विदेशी शासकों की अधीनता देखी। मनुष्य असंख्य दृश्यावलोकन करता हुआ अपनी लम्बी यात्रा तय करके उस दिव्य दृश्य के समक्ष आ पहुँचा है, जहाँ प्रभु स्वयं अपनी दिव्य लीलाएँ कर रहे हैं। जो कुछ शास्त्रों में पढ़ा, वो साकार है, जिसे देखने का इन्तज़ार था, वो सम्मुख है।

राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,
माउण्ट आबू

ये तो मनुष्य ने अनेक सुखदाई दृश्य देखे, परन्तु हम प्रभु के बच्चों ने इस अन्तिम जन्म में क्या क्या देखा, यहाँ हम उन आँखों देखे दृश्यों का उल्लेख करेंगे। हमारे साथ वे अनेक आत्माएँ भी निशिदिन अपने सर्वोच्च भाग्य का गुणगान करती हैं जिन्होंने अनेक बार ये अलौकिक दृश्य देखे और जिनका मन इतना मुग्ध हो गया कि पुनः संसार में लिप्त नहीं हुआ।

हमने उस परमसत्ता को धरती पर उतरते देखा

अनगिनत बार हमने उस परम सत्ता, परमपिता को इस धरती पर उतरते देखा। हमने देखा कि वह परम सत्ता परकाया में प्रवेश करके मनुष्यों की कैसे कैसे जन्म जन्म की प्यास बुझाते हैं। उसने इस धरा पर आकर अलौकिक यज्ञ रचा और हमने अनेक मनुष्य रूपी परवानों को उस यज्ञ में स्वाहा होते देखा। अनेकों ने अपना तन, मन, बुद्धि, धन व सर्वस्व उसमें स्वाहा कर दिया। और यहीं पर जीवनमुक्त स्थिति प्राप्त की। जो कल्पना का विषय था वो सत्य हो गया। जो तर्क का विषय रहा वो अनुभवों का खज़ाना बन गया।

प्यार के सागर को प्यार लुटाते देखा

हमने उस प्यार के सागर में सैंकड़ों बार डुबकी लगाकर तो देखा ही परन्तु हमने उस प्यार के सागर को छलकते भी देखा और उसकी छलक से अनेक प्यासी आत्माओं को तृप्त होते भी देखा। इन नयनों से देखा कि भगवान के भी अपने प्यारे वत्सों के प्रेम में नयन छलक जाते हैं। हमने उन्हें रूहों के नयन पोंछते भी देखा और प्यार की दृष्टि देकर संसार भुलाते भी। कितनी भाग्यशाली हैं वे आत्माएँ जिन्होंने प्रभु का साक्षात प्यार देखा! जिन्हें उन्होंने कृत्य कृत्य कर दिया। भक्त तो भगवान के प्रेम की एक एक बूंद के लिए चात्रक रहे, परन्तु हम प्रभु सन्तान तो उसके पुनीत प्यार का निशिदिन रसास्वादन करते हैं। इतना ही नहीं, हमने उसे अपने बच्चों को गले से लगाकर पुचकारते भी देखा और पल भर में रूहों के दर्द हरते भी देखा।

भगवान को गीता ज्ञान देते देखा

जो कान युगों से प्रभु की सुखदायिनी, मन भावनी आवाज़, क्षण भर को सुनने के लिए प्यासे थे, उन्हीं कानों से हमने, मन को रस देने वाली, प्रभु के मुख से निकली वाणी घण्टों तक सुनी। भक्त जब सुनते हैं कि भगवान ने स्वयं गीता ज्ञान दिया था तो वे सोचते हैं कि काश! वे भी प्रभु से गीता ज्ञान सुन पाते। परन्तु वह कल्पना अब साकार है। ब्रह्मा वत्स रोज़ उन्हें गीता ज्ञान सुनाते हुए देखते हैं। इन आँखों द्वारा हमने ज्ञान सागर को ज्ञान के सम्पूर्ण रहस्य खोलते देखा। रचयिता व रचना के गुह्य राज़ स्पष्ट करते हुए देखा। अपने वत्सों के समक्ष तीनों लोकों व तीनों कालों के गूढ़ रहस्य समझाते देखा। जबकि एक काठ की वीणा भी मनुष्य के मन को मुग्ध कर देती है, तो भगवान की ज्ञान वीणा मनुष्यों के मन को कितना मुग्ध करती होगी! लोग कहते हैं कि उसने प्रेरणा से ज्ञान दिया परन्तु हमने तो उसको सम्मुख ज्ञान देते हुए देखा। हमने उसे मुक्ति व जीवनमुक्ति का सत्य पथ दर्शाते भी देखा तो पुरातन मान्यताओं को निराधार बताते भी देखा।

प्रभु को नव युग रचते देखा

सृष्टि रचना के बारे में प्रचलित अनेक दर्शनों को असत्य सिद्ध करते हुए हमने इन आँखों से देखा कि भगवान नवयुग का निर्माण कैसे कर रहे हैं। लोग कहते हैं कि उसने सूर्य, चाँद, तारे, ग्रह, पृथ्वी व फिर मनुष्य बनाये, परन्तु हमने देखा कि भगवान ने किस तरह अपनी शक्ति सेना को सुसज्जित किया। उनमें आत्म विश्वास जागृत किया। हम शक्ति सेना, रावण की सेना का युद्ध भी देख रहे हैं और यह भी देख रहे हैं कि रावण सेना पराजित होकर पीछे हट रही है और शिवशक्ति सेना विजय का नगाड़ा बजाते हुए तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। हम प्रतिदिन उस परम सत्ता को अपनी सेना की मार्ग प्रदर्शना करते हुए देखते हैं।

भगवान को रूहों को धीरज देते देखा

हमने देखा कि भगवान अपने प्रिय बच्चों के प्यार में सारी सारी रातें बैठकर बच्चों की करुण कहानियाँ कैसे सुनते हैं और उन्हें गले लगाकर धीरज कैसे देते हैं। अनेक रूहों के दुःख की गाथाएँ सुनकर उनके दुःख निवारण करते देखा! हमने देखा कि वे प्यार के सागर, बिगड़ी को बनाने वाले, आत्माओं की जन्म जन्म की प्यास बुझाने के लिए किस प्रकार उनके भारी दिल को हल्का करते हैं। उनकी हर बात सुनकर समा लेते हैं। उस क्षमा के सागर को रूहों के पाप क्षमा करते हुए देखा और दया निधान का दयालु स्वरूप भी देखा।

भाग्य विधाता को भाग्य बाँटते हुए देखा

हमने देखा कि वह अवढ़र दानी भोलानाथ सर्व खज़ाने बाँटने धरती पर आते हैं और रूहों के समक्ष सब कुछ लुटा देते हैं। परन्तु कोई कुछ लेता है और कोई कुछ! सुना था कि कभी भगवान ने भाग्य बाँटा था। परन्तु कैसे बाँटा, वो अब हमने देखा। और हमें भी उसने मास्टर भाग्य विधाता बनाकर सर्व खज़ानों से भरपूर कर दिया। वह अब भाग्य बाँट रहे हैं, जो चाहो ले लो।

उस बागवान को चेतन पुष्पों में सुगन्ध भरते देखा

हम आत्माएँ उस परम बागवान के चेतन बगीचे के चेतन पुष्प हैं। हम पुष्पों से पंखुड़ियां सूख सूखकर गिर रही थीं, कोई भी हमें पानी देने वाला नहीं था। सुगन्ध, दुर्गन्ध में परिणित हो चुकी थी। ऐसे में वह बागवान पुनः आया और हमने देखा कैसे वह एक एक पुष्प में दिव्य सुगन्धी भरता जा रहा है। इस एक एक पुष्प की अलौकिक सुगन्ध से समस्त विश्व महक उठेगा और विकारों की दुर्गन्ध सदा के लिए समाप्त हो जायेगी।

दिव्य दृष्टि देते हुए देखा

भक्त तो क्षणिक दर्शन को तरसते हैं, परन्तु हमने देखा कि वो दिव्य दृष्टि का विधाता अनेक आत्माओं को दिव्य दृष्टि का वरदान देकर सम्पूर्ण अलौकिक साक्षात्कार करा रहे हैं। जो अब तक रहस्य थे, वे सब साक्षात हो गये। कितनी महान हैं वो आत्माएँ जो यहीं पर बैठे स्वर्ग के व तीनों लोकों के दृश्य देख सकती हैं। जो अप्रत्यक्ष था, वो सब प्रत्यक्ष देखा।

इन नयनों ने अनेक रूहों को भगवान के नयनों का नूर बनते भी देखा और अनेकों को प्रभु से दिव्य प्रकाश प्राप्त करके समस्त विश्व को प्रकाशित करते भी देखा। इन नयनों ने ज्ञान सागर से ज्ञान गंगाओं को जल भरते भी देखा और ज्ञान सरिताओं को सागर से मिलने के लिए प्रवाहित होते भी देखा। धन्य हैं वे आत्माएँ जो भगवान के बच्चे बने और जिन्होंने भगवान को अपना बना लिया, जो उसके प्यार के व पावन दृष्टि के अधिकारी बन गये और जिन्हें भगवान ने स्वयं कहा कि तुम मेरे हो।

हमने अनेक रूहों को प्रभु की असीम छत्र छाया में परम आनन्द व अतीन्द्रिय सुख पाते भी देखा। और प्रभु मिलन का परम आनन्द पाकर ईश्वरीय प्रेम में जगत से विरक्त होते भी देखा।

हम अब देख रहे हैं कि अनेक आत्माएं जो कि बहुत काल से अपने प्यारे परम पिता से बिछुड़ गई थीं, दौड़ी दौड़ी आकर मिलन मना रही हैं। और अनेक आत्माएं पुनः अपना श्रेष्ठ भाग्य निर्माण कर रही हैं। प्रभु अखुट खज़ानें बाँट रहे हैं, कोई अपनी झोलियाँ भर रहे हैं और कोई अभी भी सोये हुए हैं...।

OM -19- 2018 FINAL_Page 1 and 2 12/10/2018 9:30 AM Page 4

फतेहाबाद-हरियाणा। 'नवनिर्मित ज्ञान विज्ञान भवन' का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी। साथ हैं उपायुक्त डॉ. जे.के. अभीर,आई.ए.एस., ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. सीता, ब्र.कु. मदन, ब्र.कु. दीपक तथा अन्य।

देहरादून-उत्तराखण्ड। राज्यपाल महोदया बेबी रानी मौर्य को माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. विनीता, ब्र.कु. सुशील तथा ब्र.कु. रमेश।

दिल्ली-पांडव भवन। डॉ. हर्ष वर्धन,यूनियन मिनिस्टर ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी,एनवायरनमेंट,फॉरेस्ट एंड क्लाइमेट चेंज एंड अर्थ साइंस को ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही विभिन्न सेवाओं से अवगत कराने तथा माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय एवं ब्र.कु. विजया बहन।

अहमदनगर-महा.। ग्राम विकास राज्यमंत्री पंकजा मुंडे को राजयोग की जानकारी देने वाला नये वर्ष 2019 का कैलेण्डर भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके।

डाकपत्थर-उत्तराखण्ड। ज्ञान चर्चा के पश्चात् कालिन्दी हॉस्पिटल के डायरेक्टर सतीश जैन को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सविता। साथ हैं ब्र.कु. सुरेन्द्र।

संस्कार माहौल में नहीं, मुझमें है

आध्यात्मिक माहौल में सभी को एंजेलिस फील होता है? आज सारा दिन में किसी को थोड़ा सा भी एंजेलिक पर्सनैलटी से अलग एक्सपिरियंस तो नहीं हुआ कुछ? कोई छोटी बात पे इरीटेशन, नाराज़गी, गुस्सा कोई ऐसी फीलिंग, क्या लगता है ये वातावरण की वजह से हो रहा है या अपने संस्कारों की वजह से हो रहा है? अगर आपने ये समझा और ये एनालाइज़ किया कि ये वातावरण की वजह से हो रहा है तो फिर क्या हो जायेगा? तो फिर यहां से बाहर जाते ही वातावरण तो चेंज हो जायेगा। जब भी कहीं हम ऐसी जगह पर जाते हैं जहाँ का वायब्रेशन बहुत प्योर होता है चाहे हम यहाँ आये हैं, मन्दिर जाते हैं, मस्जिद, गुरूद्वारे जाते हैं हम कोई बहुत पवित्र संत, महात्माओं से मिलते हैं, जब हम उस वायब्रेशन में जाते हैं, तो हम पवित्रता और शांति को महसूस करते हैं। पर हमें लगता है कि उनकी पवित्रता हमें फील हो रही है। उनकी प्योरिटी और उस जगह की प्योरिटी, शांति हमारे अन्दर की प्योरिटी और पीस को ट्रीगर कर देती है। जैसे अगर हम किसी से मिले जो बहुत अशांत है, हम ठीक थे, उन्होंने कुछ ऐसा कह दिया तो हमारे अन्दर का गुस्सा ट्रीगर हो जाता है। लेकिन अगर हमारे अन्दर गुस्से का संस्कार होता ही ना, बिल्कुल ही ना होता तो सामने वाला कितना भी गुस्सा करे, कुछ भी करे हमारे अन्दर से कुछ ट्रीगर नहीं होगा। किसी ने आकर बटन दबाया अगर हमारे पास, तो वो गाना होगा तभी प्ले होगा। तो अगर कोई अशांत आया और हमारा बटन दबा और हम अशांत हुए, तो इसका मतलब हमारे पास वो संस्कार है। अगर हम पीसफुल जगह पर गये तो शांति का बटन दबा, प्योरिटी का बटन दबा, लेकिन क्योंकि वो गाना हमारे ऊपर है। इसलिए हम शांति और पवित्रता को फील करते हैं। ये उत्तेजना बाहर से आ सकती है, लेकिन यदि फील होता है, तो वो वहां पहले से है ही। अगर फील नहीं होता, अगर वो वहां नहीं है, तो हमें फील भी नहीं हो सकता। क्योंकि हर आत्मा का वो ओरिजनल संस्कार है। इसलिए हर आत्मा को जब ऐसी वायब्रेशन मिलेगी, तो उस आत्मा को अपनी पवित्रता अनुभव होगी। इसीलिए हम समय प्रति समय ऐसे स्थानों पर जाते हैं, ऐसे लोगों से मिलते हैं जिनसे मिलकर हमारा वो गाना गाना बज जाये। अगर पवित्र स्थान पर जाने से गाना बज सकता है, पवित्र आत्माओं से मिलने से गाना बज सकता है तो एक ऐसा है जिससे मिलने से तो गाना हर समय बज सकता है। पवित्र स्थान पर आयेंगे प्योरिटी ट्रिगर हो जायेगी, पवित्र आत्मा से मिलेंगे प्योरिटी ट्रिगर हो जायेगी, पवित्रता के सागर से मिलेंगे तो प्योरिटी ट्रिगर हो जायेगी। क्योंकि हम हर बार फिज़िकली पवित्र स्थान और लोगों से मिलने नहीं जा सकते। हमें वो गाना अब रोज़ प्ले करना है तो रोज़ प्ले करने के लिए अब अगर हम उसके संग में रहना शुरू कर दें तो हमारे ऊपर का वो गाना प्ले होना शुरू हो जायेगा। बचपन से हम सीखते आए हैं भगवान को याद करो। हमारे पेरेन्ट्स ने कहा भगवान को याद करो, हमें सिखा भी दिया कि क्या प्रेयर करनी है। हमने वो प्रेयर याद कर ली और रोज़ बोलना शुरू कर दिया। लेकिन कभी कभी ऐसा हुआ कि हम बैठे थे प्रेयर करने के लिए, मुख प्रेयर कर रहा था, हाथ भी प्रेयर कर रहा था लेकिन मन क्या कर रहा था? मन कुछ और सोच रहा है। किसकी चार्जिंग के लिए हम प्रेयर करने बैठे थे? आत्मा की चार्जिंग के लिए, अगर आत्मा ही उस समय कहीं और घमने चली गयी तो फिर हम सिर्फ खुश हो जाते हैं कि हमने पूजा कर ली। किसने पूजा की, मैंने हाथ जोड़ा, घंटी बजायी, अगरबत्ती जलाई, आरती भी की, लेकिन मुख ने आरती की। क्योंकि जब हम वो ही आरती रोज़ बोलते हैं, तो ये रोज़ कार चलाने जैसा हो गया। क्योंकि अब वो ऑटोमेटिक मोड में चली गई है। हमें आधी रात को नींद में भी कोई उठाये तो हम बोल देंगे, वो बोलने के लिए अब मन की ज़रूरत नहीं है। तो जितनी देर हम कई बार पूजा कर रहे हैं, जाप कर रहे हैं, आरती बोल रहे हैं, मन कहीं और चला जाता है, दस मिनट, पन्द्रह मिनट पूरा हुआ, पूजा पूरी हो गई। रोज़ करते हैं, जीवन भर करते आये हैं। अगर हम रोज़ परमात्मा से कनेक्ट हो रहे होते तो आत्मा रूपी बैटरी कैसी होती? तो वो दस मिनट में भी बैटरी चार्ज होते होते बैटरी दिन ब दिन चार्ज तो होती। आज तो हम कई बार अनुभव करते हैं कि दिन ब दिन हम डिस्चार्ज हो रहे हैं, क्योंकि जिसकी चार्जिंग होनी थी वो किसी और को याद कर रहा था।

ब्र.कु. शिवानी,
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

शकरकंद आपको रखे सेहतमंद

स्वास्थ्य

शकरकन्द में विटामिन ए, कैल्शियम, फास्फोरस, सोडियम, पोटैशियम, आयरन भरपूर मात्रा में और विटामिन सी अल्पमात्रा में पाया जाता है। शकरकन्द खाने में मीठा होता है। इसके सेवन से खून बढ़ता है, शरीर मोटा होता है।

एंटी ऑक्सीडेंट

शकरकंद ऐसे खाद्य पदार्थों में से एक है जसमें कैलोरी और स्टार्च औसत मात्रा में होता है। शकरकंद में सैचुरेटेड फैट और कोलेस्ट्रॉल बिल्कुल भी नहीं होता है और यह आहार फाईबर, एंटी ऑक्सीडेंट, विटामिन और मिनरल का समृद्ध स्रोत है।

प्रदर रोग (ल्यूकोरिया)

शकरकन्द प्रदर रोग में लाभकारी होता है। शकरकन्द को जिमिकन्द में बराबर मात्रा में लेकर छाया में सुखाकर और पीसकर बारीक चूर्ण बना लें। प्रदर रोग होने पर इसके 5-6 ग्राम चूर्ण को ताजे पानी और शहद में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

दिल की बीमारियां

शकरकंद में विटामिन बी-6 भरपूर मात्रा में होता है जो होमोसिस्टीन कैमिकल के स्तर को कम करने में मदद करता है जिससे दिल स्वस्थ रहता है। होमोसिस्टीन एक प्रकार का अमीनो एसिड है। जिसकी अधिकता से हृदय रोग की संभावना बढ़ सकती है।

विटामिन डी से भरपूर

विटामिन डी थाइरॉइड ग्रंथि, दांत, हड्डियों, नसों और त्वचा के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए बहुत आवश्यक होता है। शकरकंद में विटामिन डी प्रचुर मात्रा में होता है, इसलिए यह शरीर के पोषण के लिए अच्छा होता है।

प्रतिरक्षण बढ़ाता है

आयरन शरीर में एनर्जी के स्तर को बनाए रखने में मदद करता है और शकरकंद में आयरन भरपूर मात्रा में होता है, इसलिए यह शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है। इसके अलावा शकरकंद सफेद और लाल रक्त कोशिकाओं के उत्पादन में सुधार करता है।

रक्त शर्करा में स्थिरता

शकरकंद में मौजूद कैरोटीनॉइड नामक तत्व रक्त शर्करा को कम करने में मदद करता है। साथ ही इसमें मौजूद विटामिन बी-6 डायबिटिक हार्ट डिज़ीज़ को कम करने में मदद करता है।

श्वास संबंधी रोग

नियमित रूप से एक शकरकंद का सेवन शरीर के लिए विटामिन ए की ज़रूरत का 90 प्रतिशत पूरा करता है। विटामिन ए फेफड़ों के रोग जैसे वातस्फीति के इलाज के लिए बहुत फायदेमंद होता है।

पेट के अल्सर का इलाज

अगर आप पेट के अल्सर से पीड़ित हैं, तो आप जितनी जल्दी हो सके अपने आहार में शकरकंद को शामिल करें। इसमें मौजूद विटामिन सी, बीटा कैरोटीन, विटामिन बी, पोटैशियम और कैल्शियम अल्सर की आशंका को कम करता है।

दिल की धड़कन को नियंत्रित

पोटैशियम से समृद्ध शकरकंद दिल की धड़कन और तंत्रिका संकेतों को नियंत्रित करने में सहायक होता है। साथ ही पोटैशियम किडनी के कार्यों को नियंत्रित करने, सूजन को कम करने और मांसपेशियों में ऐंठन को समाप्त करने में भी मददगार है।

एंटी-इंफ्लेमेट्री

शकरकंद में मौजूद एंटी-इंफ्लेमेट्री तत्व आंतरिक और बाहरी सूजन जैसे हार्टबर्न, एसिडिटी और गठिया का इलाज करने में सहायक होता है। अगर आपको भी इस तरह की कोई समस्या है तो शकरकंद के नियमित इस्तेमाल से ठीक हो सकती है।

OM -19- 2018 FINAL_Page 1 and 2 12/10/2018 9:30 AM Page 5

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

सभी का कहना होता है कि परमात्मा ने जीवन दिया है तो कर्म तो करना पड़ेगा, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि आप उस कर्म में विकारों को जोड़ दें। उदाहरण के लिए हमारे जीवन में रोटी, कपड़ा और मकान हमारे शरीर की मूल आवश्यकता है न कि यह जीवन है। अगर यही जीवन होता तो सभी ठीक चल रहे हैं, फिर हमको इतनी मन के ऊपर मेहनत क्यों करनी पड़ती! आज बड़े घर के हों या छोटे घर के, सभी का पेट तो भर ही जाता है, लेकिन मन में इतना तनाव क्यों है अगर पेट भर गया है तो। इसका मतलब पेट का मन से कोई नाता नहीं है। अगर नाता है तो सिर्फ इतना कि हम बस उसे ढ़ो रहे हैं। नहीं तो हम आज तनाव में खाना खाते हैं, पेट में खाना तो अभी भी जा ही रहा है ना, तो स्वास्थ्य बढ़ना चाहिए। इसका मतलब सारा खेल मन का है। ऋषि, मुनी कितने दिनों तक खाना नहीं खाते थे, फिर भी वो स्वस्थ रहते थे, उनके चेहरे पर चमक बनी रहती थी, क्योंकि उनका मन बहुत ही शान्त था। इसका कारण क्या हो सकता है। अगर मन शान्त है तो उसके लिए भोजन की आवश्यकता भी नहीं होगी। ये वैज्ञानिक रूप से सिद्ध है। आज लोग ब्रेन टॉनिक लेते हैं। अलग अलग तरह के मिनरल्स व विटामिन्स लेते हैं, फिर भी मन अशान्त रहता है। शरीर के अन्दर डालने से मन खुश थोड़े ही हो जाता है। इसका मतलब सीधा है कि हमें बस अपने मन पर काम करना है। हमें कई बार ऐसे लगता है कि हम अपने सूक्ष्म संकल्पों को समझ नहीं पा रहे हैं। हमारे सूक्ष्म संकल्पों से हमारे सूक्ष्म शरीर का निर्माण होता है। जिसके ऊपर आपका यह स्थूल शरीर रखा हुआ दिखाई देता है। आज हम अपनी बुनियाद जो सूक्ष्म संकल्प हैं उन्हीं को ढ़ीला छोड़ते जा रहे हैं। राजयोग मेडिटेशन हमें यही तो गहराई से शिक्षा देता है कि अपने मन में गहराई से उन विचारों को स्थान दो जो आपको ऊर्जा प्रदान करे। जैसे आपने कहा कि मैं यह काम करने के लिए समर्थ हूँ, वैसे आपकी ऊर्जा बढ़ जायेगी। लेकिन जैसे आपने कहा मैं बीमार हूँ, मेरा मन नहीं लगता, उसी समय आपके मन में वही बीमारी की ऊर्जा प्रवाहित होने लग जायेगी। ये ऊर्जा का खेल अगर हम समझ जायें तो बिना खर्च हम स्वस्थ रह सकते हैं। लेकिन काम तो करना पड़ेगा अपने ऊपर। तो आओ इस नये वर्ष में अपने इन संकल्पों की ऊर्जा को बढ़ाएं और एक नयी शक्ति के साथ, नए वर्ष में प्रवेश कर, नए युग का निर्माण करें।

क्या हम दुनिया में सिर्फ शरीर निर्वाह अर्थ ही कर्म करने आये हैं या फिर और भी हमारी कुछ ज़िम्मेवारियां हैं? जो कर्म शरीर निर्वाह अर्थ होता है, उस कर्म से हमारे अन्दर कितने विकार आ जाते हैं, उसके लिए हम झूठ बोलते हैं, छोटी छोटी बातों में अपने को बचाने की कोशिश करते हैं। शायद इसी कारण हमारा मन और भी कमज़ोर होता चला जा रहा है।

भरतपुर-रूपवास(राज.)। कार्यक्रम के दौरान माननीय मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. सुनीता।

दिल्ली। आंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित समारोह में '83 वर्ल्ड रिकॉर्ड करने वाले पहले भारतीय' ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके को दिल्ली के भारत गौरव फाउंडेशन की ओर से 'भारत शौर्य श्री पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए भारत गौरव संदेश यादव। साथ हैं रेसलर विरेंदर सिंह तथा सांसद राजेश कुमार दिवाकर।

चुनार-उ.प्र.। राजदीप महिला पी.जी. कॉलेज,कैलहट चुनार मिर्जापुर में आयोजित कार्यक्रम में अरुण कुमार सिंहा,पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी,अधिनस्थ सेवा चयन आयोग को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. कुसुम। साथ हैं जिला पंचायत सदस्य अंजना सिंह पटेल, आर्य समाज सेवी श्याम नारायण तथा अन्य।

अहमदाबाद-गुज.। आई.पी.आर.ए. द्वारा वर्ल्ड पीस सेंटर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शांति सम्मेलन के दौरान ब्रह्माकुमारीज़ की इंटरनेशनल मैनेजमेंट कन्सलटेंट ब्र.कु.डॉ. सुनीता को 'एम्बेसडर ऑफ पीस अवॉर्ड' से सम्मानित करते हुए आई.पी.आर.ए.,जापान के जनरल सेक्रेट्री डॉ. कत्सुया कोडमा तथा चीफ ऑर्गनाइज़िंग सेक्रेट्री मुकुंद पटेल।

रावर्ट्सगंज-उ.प्र.। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् डी.एफ.ओ. संजीव कुमार सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. प्रतिमा तथा ब्र.कु. सीता।

फाज़िलनगर-उ.प्र.। मानस कथा मर्मज्ञ स्मिता वत्स को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भारती, ब्र.कु. सूरज तथा ब्र.कु. अरुण।

भीमावरम-आ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा झाँसी लक्ष्मीबाई स्कूल में आयोजित 'लक्ष दीप उत्सव' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रेवती। साथ हैं नरसापुरम के सांसद गोकराजू गंगाराजू, श्रीमती गोकराजू बंगारम्मा, डॉ. विजय बाबू तथा गांधीराजू।

ईटानगर-अरुणाचल प्रदेश। मिशमी वेलफेयर सोसायटी तथा ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'फाइटिंग ड्रग मेनेस कैम्पेन' में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. सविता,माउंट आबू। साथ हैं डॉ. सोपई तोशिक,चेयरमैन,मिशमी वेलफेयर सोसायटी, श्रीमती जोया तासुंग मोयांग,जनरल सेक्रेट्री,एम.ए.एस.ई. तथा अन्य।

जोधपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बिरला व्हाइट सीमेंट,खारिया के ऑडिटोरियम में आयोजित त्रिदिवसीय 'गीता सर्व समस्याओं का समाधान' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कम्पनी के प्लांट हेड एम.के. मिश्रा, फंक्शनल हेड आर.के. केडिया, ब्र.कु. वीणा,सिरसी,कर्नाटक, ब्र.कु. फूल बहन, ब्र.कु. शील तथा अन्य।

दिल्ली-हरिनगर। सेवाकेन्द्र पर 'गुरूपूरब उत्सव' के कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. गुरप्रीत। साथ हैं विधायक जगदीप सिंह तथा ब्र.कु. विमला।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-6(2018-2019)

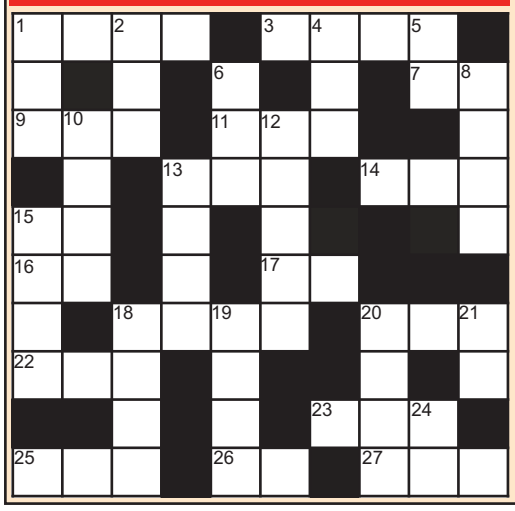

ऊपर से नीचे

1.आश्रय, ठिकाना (3)
2. सवारी, गाड़ी (3)
4. धन, दौलत, जेवर, लगान की दर (3)
5. नाशिका, नथुना (2)
6. ....धर मनुवा, धैर्य (3)
8. आवश्यकता, ज़रूरत (4)
10. पास, करीब (4)
12.साथी, सहयात्री, प्रेमी (5)
13. औजार, शस्त्र (4)
15. घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, अरूचि (4)
18.कामयाबी, सार्थकता, विजयीपन (4)
19 . . . . . सा जगतजीत, काम को जीतना (4)
20. शिकायत, दोष देना (4)
21. हालत, स्थिति (2)
24. अल्प, थोड़ा, तनिक (2)

बाएं से दाएं

1. फिकर, ...पार ब्रह्म को पाने की (4)
3. कुम्हलाना, अशक्त होना (4)
7. व्यक्ति की लम्बाई, पद, हैसियत (2)
9. हत्या करना, ठोकना, मारना (3)
11. करूणा, दया, कृपा (3)
13. पचा लेना, गबन, चोरी (3)
14. माला का एक-एक ...वैल्युबल है, दाना (3)
15. सरिता, नद्य,...ना अपना जल पीती (2)
16. चेहरे का रंग उड़ना, उदास होना (2)
17. परिणाम, नतीजा (2)
18. शासन करने वाला, शासक (4)
20. निपुण, शिक्षक, कला सिखाने वाला (3)
22. ओर, पक्ष (3)
23. सिर्फ, केवल (3)
25. बहादुरी, साहसी-पना (3)
26. अंधकार, अंधेरा (2)
27. नाखुश, राज़ को ना जानने वाला ही ...होता है (3)

-ब्र.कु. राजेश, शान्तिवन

OM -19- 2018 FINAL_Page 1 and 2 12/10/2018 9:30 AM Page 6

दादी प्रकाशमणि,
पूर्व मुख्य प्रशासिका

परमात्मा के साकार माध्यम पिताश्री ब्रह्मा

हाथ पकड़ते, बाबा ऐसी अलौकिक दृष्टि देते रहे कि मेरे में कोई लाइट और करेंट आ रही थी। मैं बाबा को देख रही थी, बाबा मुझे लाइट ही लाइट और एक फरिश्ता दिखायी पड़ रहे थे। उस दृष्टि द्वारा जो बाबा ने हाथ में हाथ दिया था उसमें बाबा ने अपनी सब शक्तियाँ और उत्तरदायित्व हमें दे दिया जो आज तक कार्य कर रही है...

18 जनवरी का अविस्मरणीय अनुभव

मीठे बाबा हमें सदैव बेहद सेवाओं में कभी कहाँ, कभी कहाँ भेजते ही रहे। अनेक सेन्टर खोलने के निमित्त बनाया। कभी दिल्ली, तो कभी मुम्बई, कभी कोलकाता, तो कभी बिहार भेजते थे। विदेश में जापान आदि की भी अचानक यात्रा करायी।

बाबा ने एवररेडी बनाया

सदैव बाबा का यह वरदान था कि बच्ची, हर समय एवररेडी रहना। बाबा का एक इशारा आता था कि तुम्हें यहाँ से वहाँ जाना है। मैं कहती थी, जी बाबा। बाबा रोज़ बेहद सेवा की कुछ न कुछ प्रेरणा भी देते थे और आज्ञा भी करते थे। अठारह जनवरी से पहले मैं गामदेवी,मुम्बई में रहती थी। थोड़े ही दिन पहले मुम्बई से बाबा के पास पार्टी लेकर आयी थी। पार्टी लेकर चली गयी। फिर और एक छोटी पार्टी लेकर दो दिन के बाद मधुबन आयी। उस समय दीदी इलाहाबाद के कुम्भ मेले में गयी थी। चौदह जनवरी मकर संक्रांति पर वहाँ मेला लगता है। उस समय विशेष अर्धकुम्भ मेला था। जब मैं यहाँ आयी तो बाबा ने कहा, बच्ची, तुम अभी आयी हो, दो चार दिन रुक जाना। बाबा कभी भी मुझे दो दिन से ज़्यादा नहीं रहने देते थे। कभी मैं कहती थी, बाबा, मैं चार पाँच दिन रहूंगी, तो बाबा कहते थे, क्यों, कोई सेवा नहीं है क्या? क्यों यहाँ रहना है? नहीं, सेवा पर चले जाओ, बादल भरके जाओ और वहाँ बरसो। जब बाबा ने खुद कहा कि दो चार दिन रह जाओ तो मैंने कहा, जी बाबा। मैं आयी थी 14 जनवरी को और जाना था 16 जनवरी को। बाबा ने कहा, बच्ची, पार्टी को जाने दो, दीदी भी नहीं है, थोड़े दिन रह जाओ। उस समय मधुबन का सारा कारोबार दीदी ही सम्भालती थी। बाबा हर बात में हम बच्चों को अनुभवी बनाते थे।

अठारह जनवरी का वो दिन

अठारह जनवरी की सुबह बाबा ने मुरली नहीं चलायी। सवेरे ही बाबा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यज्ञ के इतिहास में बाबा ने तपस्वी जीवन में केवल यह एक ही दिन था जब बाबा ने प्रातः की मुरली नहीं चलायी थी। परन्तु वे उस दिन सर्वोच्च स्थिति में स्थित थे। जब हमने डॉक्टर को बुलाने के लिए कहा तो बाबा ने उसी मस्ती में कहा था कि बच्ची, डॉक्टर क्या करेगा, मैं तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा हूँ। उस दिन बाबा ने कहा, लाओ, आज बच्चों को पत्र लिखूँ। बाबा के हाथ में थी वह लाल कलम, जिसके सुंदर अक्षर सभी के दिलों को खींच लेते हैं। बाबा ने सभी पत्रों के उत्तर दिये। बाबा ने लिखा था, बच्चे, सदा एक मत होकर चलना है, एक की याद में रहना है और सदा शक्तियों को आगे रखना है, तब ही सेवा में सफलता होगी। ये अंतिम पत्र कई बच्चों ने अपने दिल में छुपा कर रख लिये थे। कितनी सौभाग्यशाली थीं वे आत्माएं जिन्हें स्वयं सृष्टि रचयिता ब्रह्मा ने अपने हस्तों से पत्र लिखे थे। दिन में बाबा अंगुली पकड़कर मुझे मधुबन का आंगन घुमाते रहे। उस समय यह ट्रेनिंग सेंटर बन रहा था। बाबा हमें अंगुली पकड़कर दिखा रहे थे। दिन का भोजन कर बाबा ने विश्राम भी किया। शाम के समय कोई पार्टी आयी थी, बाबा उनसे भी मिले। फिर उस दिन बाबा ने कहा, आज रात का भोजन थोड़ा जल्दी कर देते हैं। उस दिन बाबा ने रात 7:30 पर भोजन किया। वैसे तो रोज़ 8:30 बजे भोजन करते थे। भोजन के बाद बाबा रात्रि क्लास में भी आये। क्लास में बाबा ने शिक्षाओं भरी मधुर मुरली सुनायी।

अच्छा बच्चे विदाई

उस दिन बाबा आठ बजे ही क्लास में आये और साकार रूप के वे अंतिम महावाक्य तो दिल में समाने जैसे हैं। बाबा ने कहा था - बच्चे, सिमर सिमर सुख पाओ, कलह क्लेश मिटे सब तन के, जीवनमुक्ति पाओ। बच्चे, निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोई। तुम्हें किसी की भी निन्दा नहीं करनी और किसी से वैर विरोध भी नहीं रखना।

इस प्रकार, याद की यात्रा पर बल देते हुए यज्ञपिता बाबा खड़े होकर गेट की ओर चले और फिर गेट पर रुक गये और बोले, बच्चे, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनो। जैसे बेहद का बाप सम्पूर्ण व सदा निर्विकारी है, सदा निराकार है, निरहंकारी है वैसे ही बच्चों को भी बनना है। फिर उस अंतिम घड़ी के पूर्व बाबा के मुख से ये शब्द निकले, अच्छा बच्चे विदाई। ये शब्द बाबा ने केवल उस रात ही बोले थे, जब बाबा साकार तन से बच्चों से सदा के लिए विदाई लेने जा रहे थे। नहीं तो बाबा सदा बच्चों को गुडनाईट ही कहा करते थे। मेरा अटेंशन गया। पर बाबा ऐसा कहकर बहुत साइलेंस में सीधे अपने कमरे में गये। बाबा बहुत साइलेंस में थे, किसी से कुछ बोले ही नहीं। सदैव बाबा मुरली के बाद गद्दी पर बैठते थे, लेकिन उस दिन बाबा सीधे जाकर पलंग पर बैठ गये।

हाथ में हाथ देकर सारी शक्तियाँ कर दी विल

अधिकतर मैं रात के समय कभी बाबा के कमरे में नहीं जाती थी। उस दिन मालूम नहीं मुझे ख्याल आया कि बाबा से गुडनाईट करूँ। मैं बाबा के कमरे में गयी। देखा तो बाबा पलंग पर बैठा है। मुझे देखकर बाबा ने कहा, आओ बेटी, आओ। मैं संकोच कर रही थी कि अंदर जाऊं या न जाऊँ क्योंकि बाबा पलंग पर थे तो शायद जल्दी सोना चाहते होंगे। बाबा ने मुझे फिर बुलाया। जब बाबा ने दुबारा बुलाया तो मैंने देखा कि बाबा बहुत साइलेंस में हैं कुछ बोले नहीं। मैं भी बाबा को देखती रही, कुछ बोली नहीं। ऐसे करते थोड़ी देर बाबा पलंग पर बैठे फिर टर्न करके पलंग से पैर नीचे करके सामने बैठे। मैं सामने खड़ी थी। उसी घड़ी बाबा ने मेरे हाथ में अपना हाथ दिया। बाबा बैठा था, मैं खड़ी थी। हाथ पकड़ते, बाबा ऐसी अलौकिक दृष्टि देते रहे कि मेरे में कोई लाइट और करेंट आ रही थी। मैं बाबा को देख रही थी, बाबा मुझे लाइट ही लाइट और एक फरिश्ता दिखायी पड़ रहे थे। उस दृष्टि द्वारा जो बाबा ने हाथ में हाथ दिया था उसमें बाबा ने अपनी सब शक्तियाँ और उत्तरदायित्व हमें दे दिया जिसको अव्यक्त बाबा ने कहा कि सारी पावर्स विल कर दी थी। उस समय मुझे पता नहीं पड़ा। दृष्टि देते देते, कुछ घड़ियों में नयन बदलने लगे और मेरा हाथ पकड़ा हुआ हल्का होने लगा। हाथ पकड़ा हुआ था, परन्तु ढ़ीला हुआ था। एक सेकण्ड में इतनी साइलेंस हुई कि एकदम डेड साइलेंस हो गयी। मैं समझ नहीं पायी कि क्या हो गया, मुझे लग रहा था कि मैं लाइट के साथ वतन में जा रही हूँ। मैं कहने लगी, बाबा, बाबा। बाबा बोल नहीं रहे थे। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो गया। बाद में पता पड़ा कि बाबा अव्यक्त हो गये। मुझे ऐसा अनुभव होने लगा कि ऑलमाइटी बाबा मेरे सामने खड़ा है और साकार बाबा हमसे छिप गया है। हमने बाबा को लिटा दिया। इतने में डॉक्टर आ गया और उसने चेक करके कहा कि बाबा अब नहीं रहे.... परन्तु मुझे ये आभास नहीं हुआ था कि बाबा चला गया है। मैं यही कह रही थी कि बाबा है....सबका प्यारा बाबा है....बाबा सदा साथ रहेगा....। बाबा ने मुझमें अथाह शक्ति भर दी थी। मैं सब जगह फोन कर रही थी। मैं कहती थी ड्रामा की भावी, ड्रामा याद है, बाबा अव्यक्त हो गये। जो भी आना चाहे भले आये। कोई भी आँसू न बहाये, बाबा तो अभी भी हमारे साथ हैं।

छत्तरपुर-म.प्र.। विश्व दिव्यांग दिवस पर आयोजित 'दिव्यांग समानता, संरक्षण एवं सशक्तिकरण' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सामाजिक न्याय विभाग में पदस्थ प्रमुख कलाकार बी.के. पटैरिया, आई.ए. खान, सी.डब्ल्यू.एस.एन. दिव्यांत छात्रावास से सुजीत यादव, प्रगतिशील छात्रावास से अनीता, पटवारी रचना राठौर, ब्र.कु. रमा, ब्र.कु. कल्पना तथा ओमप्रकाश अग्रवाल।

नई दिल्ली। योग कॉन्फिडरेशन ऑफ इंडिया तथा इंडो यूरोपियन चेम्बर ऑफ स्मॉल एंड मीडियम इन्टरप्राइज़ेज़ द्वारा आयोजित '11वें नेशनल वुमेन एक्सीलेंस अवॉर्ड-2018' में ब्रह्माकुमारी बहनों तथा अन्य क्षेत्रों की विशिष्ट महिलाओं को सम्मानित किया गया।

ठाणे-महा.। सेवाकेन्द्र द्वारा सावरकर नगर में विश्व यादगार दिवस पर कार्यक्रम के पश्चात् ब्र.कु. सरला को शॉल पहनाकर सम्मानित करते हुए विद्या कोवारकर,महिला शाखा संघटक।

OM -19- 2018 FINAL_Page 1 and 2 12/10/2018 9:30 AM Page 7

बाबा ने विश्व सेवा के योग्य बनाया

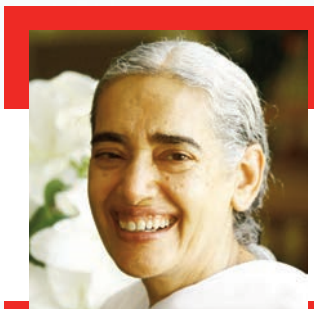

ब्र.कु. जयंती,यू.के. एंड ओवरसीज़ कोऑर्डिनेटर

बाबा हर कर्म करते देह भान से परे अव्यक्त और लाइट माइट का अनुभव कराते थे। जैसे खेलते समय बाबा ने मुझसे पूछा कि बच्ची जानती हो किसके साथ खेल रही हो, शिव बाबा के साथ खेल रही हो ना! तो न सिर्फ बाबा ने शब्दों से हमें बताया बल्कि प्रैक्टिकल हमें अनुभव कराया। ऐसे सदा बाबा ने व्यक्त में रहते भी अव्यक्त की अनुभूति कराई।

बाबा के प्यार ने मेरा दिल जीत लिया

बात सन् 1959 की है, उन दिनों मुझे लंदन बहुत दूर लगता था। उस समय मई मास में भारत में आम की सीज़न चल रही थी। तब लंदन में आम की कमी थी। तो बाबा ने 4 आम का पैकेट एयर-मेल से हमारे घर भेजा था। तो उस पैकेट को देखकर मैं और मेरा 6 वर्ष का छोटा भाई एकदम आश्चर्यचकित हुए। हमें लगा कि बाबा हमें कितना याद करते और प्यार भी देते हैं। जो प्यार हमें लौकिक सम्बंधियों से नहीं मिलता था, वह बाबा ने हमें दिया। सचमुच उस अनोखे प्यार ने मेरा तो दिल ही जीत लिया था।

बाबा से मिलकर मुझे अपनापन महसूस होता था। ऐसा लगता था कि बाबा सब कुछ जानते हैं। बाबा जैसे कि मन की बातें पढ़ लेते थे। उस समय बाबा ये नहीं देखते थे कि इन बच्चों में इतना ज्ञान तो नहीं है, फिर भी शुभचिन्तक बनकर हमें सुंदर राज़युक्त बातें सुनाते थे और हर प्रकार की स्थूल तथा सूक्ष्म खातिरी करते थे। फिर तो हम लंदन चले गए और मैं अपनी पढ़ाई में व्यस्त हो गई।

मैंने अपने जीवन का फैसला किया

जून 1968 में मधुबन में झोपड़ी में बैठे हुए बाबा से मैंने अपने जीवन के फैसले की बात की। तो बाबा ने मुझे पूछा कि बच्ची क्या

चाहती हो? तो थोड़े ही शब्दों में मैंने कहा कि बाबा मैं तो ईश्वरीय सेवा में ही अपना जीवन सफल करना चाहती हूँ। तो बाबा ने तुरंत कहा कि बच्ची तो विजयी बनेगी। वह घड़ी तो मेरे जीवन में महत्वशाली घड़ी थी।

बाबा हमारे साथ खेल खेलते थे

ब्रह्मा बाबा बुजुर्ग थे, फिर भी हम बच्चों को खुश करने के लिए चुस्ती से बैडमिंटन का खेल खेलते थे। खेलते समय बाबा लाइट और माइट हाऊस अनुभव होते थे। बाबा ने मुझसे पूछा कि बच्ची जानती हो किसके साथ खेल रही हो, शिव बाबा के साथ खेल रही हो ना! तो न सिर्फ बाबा ने शब्दों से हमें बताया, बल्कि प्रैक्टिकल हमें अनुभव कराया। ऐसे ही एक बार मैं बाबा के साथ भोजन कर रही थी, बाबा ने मुझे बहुत देर तक दृष्टि दी। तो वायब्रेशन्स से ऐसा लगता था कि हम किसी साधारण व्यक्ति के साथ नहीं, बल्कि पावरफुल अथॉरिटी के साथ हैं।

बाबा के जीवन में संतुलन देखा

बाबा की पावरफुल पर्सनैलिटी होते हुए भी, नम्रभाव और प्रेमसम्पन्न व्यवहार देखा। वैसे तो संसार में हम देखते हैं कि किसी की अगर पर्सनैलिटी अच्छी होती है तो साथ में रोब ज़रूर होता है। परंतु बाबा के जीवन में यह अनोखा संतुलन था, इसलिए विश्वपिता होते हुए भी यज्ञ की हर छोटी-छोटी बात का ध्यान रखते थे। हरेक बच्चे के लिए हर प्रकार की सुविधा हो, ऐसा प्रैक्टिकल माता का पार्ट बजाते हुए भी हमने बाबा को देखा।

अव्यक्त बापदादा ने मुझे विदेश सेवा पर भेजा

अव्यक्त बापदादा ने जून 1969 में मुझे कहा कि बच्ची, बाबा तुम्हें लौकिक घर (लंदन) में नहीं भेज रहे हैं, बल्कि विशेष सेवार्थ भेज रहे हैं। तुम भले अपने घर में रहो, लेकिन मधुबन जैसी दिनचर्या बनाना जिससे आपकी सेफ्टी भी रहेगी और बाबा आपको शक्ति भी देते रहेंगे। बाबा ने मुझे विशेष कहा था कि अमृतवेले भगवान का द्वार वरदान पाने के लिए सदा खुला रहता है, जितना खज़ाना चाहो ले सकती हो। तो लंदन में इतनी सर्दी होते हुए भी मैं और रजनी बहन(लौकिक माता) प्रतिदिन प्रातः योग और मुरली क्लास करते थे जिससे हमारा उमंग-उल्लास सदा बढ़ता ही रहा। बाद में 1971 में वहाँ भारत से कुछ भाई-बहनें सेवार्थ आये थे जिससे धीरे-धीरे सेवा बढ़ती गई। फिर 1974 में दीदी जानकी जी का सेवार्थ आना हुआ। दादी जी के आने के बाद तो सेवा वृद्धि को पाती रही और अभी तो बहुत तेज़ी से बाबा की सेवा आगे बढ़ती जा रही है।

बाबा विदेश में फरिश्ता रूप से सेवा कर रहे हैं

ब्रह्मा बाबा अव्यक्त होने के बाद जैसे कि फरिश्ता रूप से विशेष विदेश सेवा कर रहे हैं, ये अनुभव कई बार हमें हुआ। विदेशी बच्चों को जगाकर पालना भी कर रहे हैं। इससे उनको ऐसा लगता है कि ये हमारे ही पिता हैं जो हमें प्यार करते और शक्ति भी देते हैं। कई विदेशियों को विशेष प्रेरणाएं तथा दिव्य अनुभव प्राप्त होते हैं।

बाबा की मदद सदा मिलती है

एक बार करेबियन के बहामास में एक गुरू के आश्रम में बहुत बड़ी कॉन्फ्रेन्स थी, जिसमें हमें निमंत्रण मिला था। भाषण का विषय था 'दो हज़ार सन् के बाद संसार का भविष्य'। तो मैं उस समय लंदन में ही थी। तो मैंने इसका जवाब पूछने के लिए मधुबन में पत्र लिखा। तो बापदादा ने बहुत सुंदर शब्दों में उसका जवाब दिया था कि बच्ची, विनाश के बारे में तो कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं। उन्हें बताओ कि भविष्य में बहुत सुंदर स्वर्णिम दुनिया आ रही है, उसके लिए हमें किस प्रकार की तैयारी करनी चाहिए, तो ये सुनकर वो खुश हो जायेंगे। मुझे सेवा करते समय साकार बाबा की बताई हुई बात याद आती है कि मुरली चलाते समय बाबा के सामने एक देश के, एक धर्म के लोग होते हुए भी ऐसी बातें सुनाई जो सर्वधर्म और सर्वदेश की आत्माओं के काम की बातें थीं। उससे स्पष्ट होता था कि बीजरूप, ज्ञान सागर बाप बोल रहे हैं। बाबा ने 1967 में मुझे कहा था कि बच्ची विदेश में जाकर बाबा का ज्ञान सुनाएगी, उन्हों को बताएगी कि विश्व की हिस्ट्री, जॉग्रफी क्या है, और जैसे ही वो लोग सुनेंगे तो पूछेंगे कि ये ज्ञान तुमको सिखाने वाला कौन है? और बच्ची कहेगी कि ये ज्ञान बाप भारत देश में आबू पर्वत पर मधुबन में सुना रहा है। तो 1970 से लेकर विदेश में जब भी भाषण करने का मौका मिला तो कई बार इस प्रकार की सीन प्रैक्टिकल में देखी। सचमुच बाबा और मधुबन की याद मुझे सदा लाइट रखती है। सेवाक्षेत्र में बहुत बातें आती हैं, फिर भी स्वयं को डबल लाइट रखकर उड़ता पंछी बन सदा उड़ती रहती हूँ। दूसरी बात, मैं अपनी बुद्धि की लाइन सदा क्लीयर रखती हूँ जिससे समय प्रति समय स्व-उन्नति के लिए तथा विश्व-सेवा के लिए बाबा की प्रेरणाओं को कैच कर सकूं।

रूहानियत से राहगीरों को... - पेज 1 का शेष

भी तो है ना! कि हर रात अपनी पुरानी सृष्टि जो आपने अपने द्वारा बनायी थी, उसे ही तो पूरी तरह से विनाश करना है। लेकिन इतनी अवेयरनेस नहीं है। आप चिंता में ही सोते। आप सोचिए, चिंता उस दिन की कहाँ से आई, उसपर विचार किया? कि फिर वह सूक्ष्म रूप से चिंता घर कर गई और हमारी सृष्टि चिंता वाली बन गई! तो इस प्रकार सूक्ष्म रीति से शांति, प्यार व पवित्रता के सूक्ष्म संकल्प द्वारा नई सुन्दर सृष्टि बनाने का प्रयास ही महानतम कार्य है। यही कार्य इतने सालों से ब्रह्मा बाबा करते आ रहे हैं। समग्र दृष्टिकोण से मानव के मन को सहर्ष सुकून, शांति, शक्ति, खुशी, समृद्धि देने का कार्य यदि किसी ने किया, तो हमारे ब्रह्मा ने। जो आज भी उसी भाव से सभी को सकाश दे पालना कर रहे हैं। पूरा ब्राह्मण परिवार जो आज सुरक्षित महसूस करता, सिर्फ अव्यक्त ब्रह्मा की बदौलत, जिसकी नज़र हर वक्त हम बच्चों पर है। ऐसे आदि पिता, पिताश्री ब्रह्मा बाबा को उनकी 50वीं स्मृति दिवस पर शत् शत् नमन्।

पानीपत-हरियाणा। 'हेल्थ, वेल्थ, हैप्पीनेस' मेले का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सरला, ब्र.कु.अमीरचंद, परिवहन राज्यमंत्री कृष्ण लाल पंवार, ब्र.कु. भारतभूषण, विधायक रोहिता रेवरी तथा सुरेन्द्र रेवरी।

ऋषिकेश-उत्तराखण्ड। 'अभिनन्दन समारोह में सफलतामूर्त बनने का आधार राजयोग' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए अनीता ममगई,फर्स्ट मेयर,नगर निगम, राधा रामोला,काउंसलर,वार्ड न. 22, विजय बदोनी,काउंसलर,वार्ड न. 33, ब्र.कु. आरती तथा अन्य।

मोहाली-पंजाब। दो दिवसीय 'खुशियां आपके द्वार' कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में प्रो. ओंकार चंद,माउंट आबू, मेजर जनरल आई.पी. सिंह, ब्र.कु. प्रेमलता, श्रीमति बलदीप कौर,डेप्युटी एक्साइज़ एंड टैक्सेशन कमीश्नर, अश्विनी शर्मा,न्यूज़ हेड,ऑल इंडिया रेडियो, डेप्युटी कलेक्टर ए.के. सैनी,डेप्युटी कलेक्टर, विजिलेंस, गुरचरण सिंह सरन,पूर्व जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा अन्य।

नारनौल-हरियाणा। 'वर्ल्ड डे ऑफ रिमेम्बरेन्स फॉर रोड ट्रैफिक विक्टिम्स' कार्यक्रम में मंचासीन हैं धर्मवीर औथ,मेम्बर,आर.एस.ओ., ब्र.कु. मनोहर लाल, नरेश गोगिया,वाइस प्रेसीडेंट,आर.एस.ओ., सावंत सिंह,ट्रैफिक इंचार्ज व एस.एच.ओ., ब्र.कु. अंजु, टेकचंद, इंस्पेक्टर,होम गार्ड, बलदेव चहल,समाजसेवी तथा सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. कमल ।

वेतिया-विहार। प्रभु उपवन सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम के दौरान सौगात देने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. कंचन, डी.ए.ओ. शिलाजीत, डॉ. अमरनाथ, डॉ. अंजनी, डॉ. संतोष, मारवाड़ी महिला समिति की अध्यक्षा मीना तोड़ी तथा अन्य।

आगरा-उ.प्र.। आर्ट गैलरी म्यूज़ियम पर नि:शुल्क मेडिकल कैम्प लगाया गया। चित्र में कैम्प का लाभ लेते हुए भाई-बहनें।

OM -19- 2018 FINAL_Page 1 and 2 12/10/2018 9:30 AM Page 8

आज़मगढ़-उ.प्र.। कृषि मेले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् कृषि राज्यमंत्री सूर्य प्रताप शाही को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रंजना।

मुम्बई-डोम्बीवली। डॉ. राजकुमार कोल्हे को 'यशोगाथा अवॉर्ड-2018' से सम्मानित करते हुए विधायक निरंजन दवकारे। साथ हैं स्वामी सखा पवन भूमि ट्रस्ट के अध्यक्ष राजेन्द्र वकरे तथा कार्यक्रम संयोजिका श्रीमति सीमा वकरे।

तखतपुर-छ.ग.। 'धर्म व अध्यात्म द्वारा विश्व परिवर्तन' कार्यक्रम में मंचासीन हैं आचार्य महामण्डलेश्वर श्री श्री 1008 डॉ. स्वामी शिवस्वरूपा नन्द सरस्वती जी, ब्र.कु.नारायण, ब्र.कु. पुष्पा तथा ब्र.कु. ममता।

राजगढ़-म.प्र.। 'देव प्रबोधिनी एकादशी' के अवसर पर आयोजित चैतन्य झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. वैशाली, ब्र.कु. नम्रता, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. तेजस्वी, ब्र.कु.भाग्यलक्ष्मी, रिटायर्ड बैंक मैनेजर अरविंद सक्सेना तथा अन्य।

बाजपुर-उत्तराखण्ड। विश्व शांति और सद्भावना के लिए कैंडल यात्रा करते हुए भाई-बहनें।

परमात्मा ने बताई जीवन जीने की विधि

गीता के अठारहवें अध्याय में है कि जीवन के अंदर जो विशिष्ट बातें हैं कि तीन प्रकार की बुद्धि, तीन प्रकार का त्याग, तीन प्रकार के सुख, तीन प्रकार की धारणा की शक्ति, तीन प्रकार के कर्म अर्थात् किस प्रकार का जीवन हमें जीना है, ये हमें खुद निश्चित करना होगा। यदि हमें एक सात्विक जीवन जीना है, तो हमारी बुद्धि कैसी होनी चाहिए? हमारी धारणा शक्ति कैसी होनी चाहिए? हमारे कर्म कौन से होने चाहिए और उनसे उपलब्ध सुख किस प्रकार का होता है? इस प्रकार की तीन तीन बातों को और स्पष्ट किया है। सारांश में जीवन जीने की विधि बतायी है। अठारहवां अध्याय पूरे सत्रह अध्यायों का सार है। सन्यास की परम सिद्धि क्या है, उसको भी स्पष्ट किया है। सन्यास का मतलब ये नहीं कि सबकुछ छोड़ देना, अपने कर्त्तव्यों को छोड़ना, अपनी ज़िम्मेवारियों को छोड़ना। उसको सन्यास नहीं कहा जाता है।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

मनुष्य के अंदर रही हुई आसुरी वृत्तियों का सन्यास, इसकी विशेष प्रेरणा दी है। यहाँ त्याग का अर्थ और मानवीय चेतना तथा कर्म पर प्रकृति के गुणों का प्रभाव समझाते हैं। इस अध्याय में वर्णित संकेत हमारे आंतरिक व्यक्तित्व का बोध कराते हैं कि किस प्रकार के व्यक्तित्व को हमें अपने भीतर से निर्माण करना है और समय प्रति समय हम इन सूचकों के आधार पर अपने व्यक्तित्व का अवलोकन करें कि ये सात्विक हैं, राजसिक हैं या तामसिक हैं। उसके आधार पर स्वयं का परिवर्तन करें।

श्रीमद्भगवद् गीता की महिमा तथा उसके स्तर का वर्णन इस प्रकार समझते हैं। धर्म का सर्वोच्च मार्ग शरणागति है अर्थात् स्वयं को समर्पित कर देना या स्वयं को समर्पित भाव में ले आना है। जो पूर्ण प्रकाश प्रदान करने वाला है और मनुष्य आत्मा को वापिस जाने की समर्थी प्रदान करता है कि किस प्रकार की समर्थी आत्मा में होनी चाहिए। इसमें पहले श्लोक से लेकर बारहवें श्लोक तक सन्यास और त्याग का आधार और उनके प्रकार बताये गये हैं। तेरहवें श्लोक से लेकर सत्रहवें श्लोक तक कर्म की सिद्धि में पाँच कारण बताए गए हैं। अठारहवें श्लोक से लेकर अट्ठाइसवें श्लोक तक ज्ञान, कर्म और कर्ता गुण भेद के तीन प्रकार बताए गए हैं। उन्तीसवें श्लोक से पैंतीसवें श्लोक तक बुद्धि और धारणा के तीन प्रकार बताए गए हैं। छत्तीसवें श्लोक से उनचालिसवें श्लोक तक तीन प्रकार के सुखों का वर्णन किया गया है। चालिसवें श्लोक से लेकर अड़तालिसवें श्लोक तक वर्ण धर्म के स्वभाव, जन्य कर्म बताए गए हैं। उनचासवें श्लोक से लेकर 54 वें श्लोक तक परमात्मा के निर्देश अनुसार कर्म और शरणागति को स्पष्ट किया गया है।

सड़सठवें श्लोक से लेकर के तिहत्तरवें श्लोक तक गुह्य गीता ज्ञान का महत्व और उसकी उपलब्धि स्पष्ट की गई है।

इस तरह से अठारहवां अध्याय सम्पूर्ण गीता में सबसे बड़े ते बड़ा अध्याय है। जिसके अन्दर कुल में 78 श्लोक हमारे सामने हैं। भगवान से अर्जुन पूछता है कि सन्यास और त्याग का यथार्थ स्वरूप क्या है? इन दोनों के बीच का अन्तर स्पष्ट करने के लिए उसने प्रार्थना की। भगवान कहते हैं : त्याग तीन प्रकार के हैं। यज्ञ, दान और तप। ये कर्म त्याग करने के योग्य नहीं है। इंसान को त्याग क्या करना चाहिए, किस बात का सन्यास करना चाहिए ये ज्ञान होना बहुत ज़रूरी है। जो विशेष जीवन के अंदर उपयोगी चीज़ें हैं उसका त्याग करने की बात कही है। यज्ञ, तप और दान ये तीनों कर्म त्याग करने के योग्य नहीं हैं, क्यों? क्योंकि ये मनुष्यों को भी पवित्र करने वाले हैं। नियत कर्म को कर्त्तव्य समझकर इसमें आसक्ति और फल को त्यागना, ये सात्विक त्याग है अर्थात् हर जगह सम्पूर्ण गीता के अंदर यह बात हमने बार बार सुनी है कि आसक्ति का त्याग करो। - क्रमशः

यह जीवन है...

मोह में फंसकर आप परमात्मा जैसे प्यारे रिश्ते को कैसे भूल जाते हैं! संसार में अगर कोई भी सच्चा रिश्ता है, तो वह परमात्मा का रिश्ता है। वह कभी पलभर के लिए भी आपको स्वयं से अलग नहीं करता। वह जीते जी और मरने के बाद भी आपका साथ नहीं छोड़ता, तो आप उसे कैसे भूल सकते हैं! इस दुनिया की हर चीज़ उस परमात्मा की दी हुई है। अगर उससे कुछ मांगना ही है, तो उसे ही मांग लें।

ख्यालों के आईने में...

कुछ नेकियां और कुछ अच्छाइयां अपने जीवन में ऐसी भी करनी चाहिए, जिनका ईश्वर के सिवाय कोई और गवाह ना हो।

चलो ज़िन्दगी को ज़िंदादिली से जीने के लिए एक छोटा सा उसूल बनाते हैं। रोज़ कुछ अच्छा याद रखते हैं और कुछ बुरा भूल जाते हैं।

दिल्ली-पीतमपुरा। सेवाकेन्द्र की 30वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. चक्रधारी, ब्र.कु. प्रभा, डॉ. आर.पी. गर्ग, लॉरेल स्कूल के डायरेक्टर सुरेश जी तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)

कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

OM -19- 2018 FINAL_Page 1 and 2 12/10/2018 9:30 AM Page 9

कथा सरिता

लोभ का कुआं

एक बार राजा भोज के दरबार में एक सवाल उठा कि ऐसा कौन सा कुआं है जिसमें गिरने के बाद आदमी बाहर नहीं निकल पाता? इस प्रश्न का उत्तर कोई नहीं दे पाया। आखिर में राजा भोज ने राज पंडित से कहा कि इस प्रश्न का उत्तर सात दिनों के अंदर लेकर आओ, वरना आपको अभी तक जो इनाम धन आदि दिया गया है, वापस ले लिए जायेंगे तथा इस नगरी को छोड़कर दूसरी जगह जाना होगा।

छः दिन बीत चुके थे। राज पंडित को जवाब नहीं मिला था। निराश होकर वह जंगल की तरफ गया। वहाँ उसकी भेंट एक गड़रिए से हुई।

गड़रिए ने पूछा : आप तो राजपंडित हैं, राजा के दुलारे हो, फिर चेहरे पर इतनी उदासी क्यों?

यह गड़रिया मेरा क्या मार्गदर्शन करेगा! यह सोचकर पंडित ने कुछ नहीं कहा। इस पर गड़रिए ने पुनः उदासी का कारण पूछते हुए कहा, पंडित जी हम भी सतसंगी हैं, हो सकता है आपके प्रश्न का जवाब मेरे पास हो, अतः निःसंकोच कहिए।

राज पंडित ने प्रश्न बता दिया और कहा कि अगर कल तक प्रश्न का जवाब नहीं मिला तो राजा मुझे नगर से निकाल देगा।

गड़रिया बोला - मेरे पास पारस है, उससे खूब सोना बनाओ। एक भोज क्या, लाखों भोज तेरे आगे पीछे घूमेंगे! बस, पारस देने से पहले मेरी एक शर्त माननी होगी कि तुझे मेरा चेला बनना पड़ेगा।

राज पंडित के अंदर पहले तो अहंकार जागा कि दो कौड़ी के गड़रिए का चेला बनूँ! लेकिन स्वार्थ पूर्ति हेतु चेला बनने के लिए तैयार हो गया।

गड़रिया बोला - पहले भेड़ का दूध पीओ फिर चेले बनो। राज पंडित ने कहा कि यदि ब्राह्मण भेड़ का दूध पीयेगा तो उसकी बुद्धि मारी जायेगी। मैं दूध नहीं पीऊंगा।

तो जाओ, मैं पारस नहीं दूंगा, गड़रिया बोला। राज पंडित बोला - ठीक है, दूध पीने को तैयार हूँ, आगे क्या करना है?

गड़रिया बोला - अब तो पहले मैं दूध को जूठा करूंगा फिर तुम्हें पीना पड़ेगा। राजपंडित ने कहा - तू तो हद करता है, ब्राह्मण को जूठा दूध पिलायेगा? तो जाओ - गड़रिया बोला। राज पंडित बोला - मैं तैयार हूँ जूठा दूध पीने को। गड़रिया बोला - वह बात गयी। अब तो सामने जो मरे हुए इंसान की खोपड़ी का कंकाल पड़ा है, उसमें मैं दूध दोहूंगा, उसको जूठा करूंगा, कुत्ते को चटवाऊंगा फिर तुम्हें पिलाऊंगा। तब मिलेगा पारस। नहीं तो अपना रास्ता लीजिए।

राज पंडित ने खूब विचार कर कहा - है तो बड़ा कठिन, लेकिन मैं तैयार हूँ।

गड़रिया बोला - मिल गया जवाब? यही तो कुआं है! लोभ का, तृष्णा का, जिसमें आदमी गिरता जाता है और फिर कभी नहीं निकलता। जैसे कि तुम पारस को पाने के लिए इस लोभ रूपी कुएं में गिरते चले गए।

विश्वास

एक व्यक्ति की नई-नई शादी हुई और वो अपनी पत्नी के साथ वापिस आ रहे थे। रास्ते में वो दोनों एक बड़ी झील को नाव के द्वारा पार कर रहे थे, तभी अचानक एक भयंकर तूफान आ गया। वो आदमी वीर था लेकिन औरत बहुत डरी हुई थी क्योंकि हालात बिल्कुल खराब थे। नाव बहुत छोटी थी और तूफान वास्तव में बहुत भयंकर था और दोनों किसी भी समय डूब सकते थे। लेकिन वो आदमी चुपचाप, निश्छल और शांत बैठा था जैसे कि कुछ नहीं होने वाला। औरत डर के मारे कांप रही थी और वो बोली, 'क्या तुम्हें डर नहीं लग रहा' ये हमारे जीवन का आखिरी क्षण हो सकता है! ऐसा नहीं लगता कि हम दूसरे किनारे पर कभी पहुंच भी पायेंगे। अब तो कोई चमत्कार ही हमें बचा सकता है। वरना हमारी मौत निश्चित है। क्या तुम्हें बिल्कुल डर नहीं लग रहा? कहीं तुम पागल-वागल या पत्थर-वत्थर तो नहीं हो? वो आदमी खूब हँसा और एकाएक उसने म्यान से तलवार निकाल ली। औरत अब और परेशान हो गई थी कि अब ये क्या कर रहा है!

तब वो उस नंगी तलवार को उस औरत की गर्दन के पास ले आया, इतना पास कि उसकी गर्दन और तलवार के बीच बिल्कुल कम फर्क था क्योंकि तलवार लगभग उसकी गर्दन को छू रही थी। वो अपनी पत्नी से बोला, 'क्या तुम्हें डर लग रहा है'? पत्नी खूब हँसी और बोली, 'जब तलवार तुम्हारे हाथ में है तो मुझे क्या डर'! मैं जानती हूँ कि तुम मुझे बहुत प्यार करते हो। उसने तलवार वापिस म्यान में डाल दी और बोला कि 'यही मेरा जवाब है'। मैं जानता हूँ कि भगवान मुझे बहुत प्यार करते हैं और ये तूफान उनके हाथ में है। इसलिए जो भी होगा अच्छा ही होगा। अगर हम बच गये तो भी अच्छा और अगर नहीं बचे तो भी अच्छा, क्योंकि सब कुछ उस परमात्मा के हाथ में है और वो कभी कुछ भी गलत नहीं कर सकते। वो जो भी करेंगे हमारे भले के लिए करेंगे। हमेशा विश्वास बनाये रखो। 'व्यक्ति को हमेशा उस परमपिता परमात्मा पर विश्वास रखना चाहिए जो हमारे पूरे जीवन को एक पल में बदल सकता है।'

अतृप्त जीवन

एक संत को एक बार रास्ते में पड़ा धन मिल गया। उन्होंने निश्चय किया कि वे इस धन को उसे देंगे जो सबसे गरीब है। गरीब व्यक्ति की तलाश में वे घूमते रहे लेकिन उन्हें कोई ऐसा सुपात्र गरीब मिला ही नहीं जो कि रोजी रोटी चलाने में सक्षम न हो। कई दिन बीत गए। एक दिन संत ने देखा उनके आश्रम के आगे से अस्त्र-शस्त्रों से सजी विशाल रैली कूच कर रही है।

रैली के साहूकार नेता ने संत को प्रणाम किया। संत ने पूछा इतनी फौज लेकर कहाँ जा रहे हो? साहूकार ने कहा- महाराज, गाँव में कुछ ज़मीन ऐसी पड़ी है जिसको हम अपने कब्ज़े में लेना चाहते हैं, लेकिन गांव वालों ने देने से मना कर दिया है। इस फौज द्वारा वहाँ कब्ज़ा लेने जा रहे हैं। संत समझ गए इस साहूकार से अधिक गरीब व्यक्ति मिलने वाला नहीं है।

संत ने वह सारा धन साहूकार को अर्पित कर दिया और कहा, मैं गरीब व्यक्ति की तलाश में कई दिनों से था, आज वह तलाश पूरी हुई। तुम दुनिया में सबसे गरीब हो। साहूकार सुनकर अवाक रह गया। उसे समझ में नहीं आया कि सबसे गरीब मैं कैसे हुआ?

संत ने कहा, तुम्हारे खज़ाने तो हीरे-जवाहरातों से भरे पड़े हैं। फिर भी यह फौज, अवैध तरीके से ज़मीन हथियाना, धन इकट्ठा करना, लोगों का खून बहाना, क्या ये अमीरी के लक्षण हैं! साहूकार की गर्दन झुक गई, वह शर्मिंदा हुआ और संत की वाणी से, जीने की नई राह प्राप्त कर वापस लौट गया।

जिसका मन गरीबी महसूस करता है, धन साधनों की भरमार होते भी मन कहता है यह तो कुछ भी नहीं, अभी और चाहिए और मिल जाने पर फिर कहता है और चाहिए। जो मिला है उसका सुख भोग कर तृप्त होने का तो समय ही नहीं है। जो नहीं मिला उसे किसी भी विकार का सहारा लेकर अपना बनाने की योजनाओं में ही समय लगा देता देता है।

हमें ऐसे अतृप्त जीवन को त्याग कर तृप्त आत्मा बनने के लिए राजयोग का अभ्यास करना चाहिए और ज्ञान, गुण, शक्तियों के धन को एकत्रित कर सदा काल के लिए तृप्त होना चाहिए।

शिवली-कानपुर देहात(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का रिबन काटकर शुभारम्भ करते हुए नगराध्यक्ष अवधेश कुमार शुक्ला। साथ हैं ब्र.कु. बिमलेश तथा अन्य।

महम-हरियाणा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् सुगर मिल के एम.डी. निर्मल नागर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. चेतना तथा ब्र.कु. सुमन।

राँची-झारखण्ड। 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत' अखिल भारतीय प्रदर्शनी बस अभियान के राँची पहुंचने पर आयोजित शोभा यात्रा का शिव ध्वज लहराकर शुभारंभ करते हुए प्रसिद्ध समाजसेवी एवं राँची वि.वि. के दर्शन शास्त्र के प्रो. डॉ. सुनील अंकन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. निर्मला तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

सासाराम-बिहार। 'सड़क सुरक्षा अभियान' का शिवध्वज लहराकर शुभारंभ करते हुए लायन्स क्लब के एस.पी. वर्मा, मोटर वेहिकल इंस्पेक्टर गिरीश कुमार, अध्यक्ष श्रीधर पाण्डे, ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।

गोण्डा-उ.प्र.। ज्ञान चर्चा के पश्चात् पुलिस अधीक्षक लल्लन सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दिव्या।

बहेड़ी-उ.प्र.। रामलीला मेले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् तहसीलदार बजपाल जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुखदेवी। साथ हैं ब्र.कु. लता तथा अन्य।

कायमगंज-उ.प्र.। महिला क्लब में कार्यक्रम के पश्चात् समाज सेवी सरिता गोयल, सुनीता सचान सहित अन्य गणमान्य महिलाओं को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. मिथेलश।

मनीला-फिलीपींस। लास पिनास के वन लुनास प्लेस में सेवाकेन्द्र का उद्घाटन, दीपावली तथा स्नेह मिलन कार्यक्रम को उत्साहपूर्वक मनाते हुए ब्र.कु. रजनी,डायरेक्टर, ब्रह्माकुमारीज़, जापान, ब्र.कु. ऐलन लुना, ब्र.कु. जूने लुना तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

गुमला-लोहरदगा। स्वच्छ भारत अभियान के तहत नदिया हिन्दु हाई स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में स्वच्छता की शपथ लेते हुए ब्र.कु. अमरमणी, स्कूल के प्रिन्सीपल अनिल कुमार, शिक्षक गण तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

OM -19- 2018 FINAL_Page 1 and 2 12/10/2018 9:30 AM Page 10

आज आवश्यकता शक्तिशाली संकल्पों की

विश्व हमारी तरफ नज़र उठाए देख रहा है, लेकिन हम शायद ऐसे नज़रें दिखाने को आतुर नहीं हैं। दिखावा आज की ज़रूरत नहीं है, दिल से पुरूषार्थ करने की नितान्त आवश्यकता है। हम सभी उसी दौर में चल रहे, सबकुछ अभी भी साधारण ही है, साधारण बोल, कर्म, और संकल्प भी, तो क्यों ना कुछ अलग करें...

आज शक्तिशाली संकल्प की आवश्यकता है। जिसका सहयोग विश्व को सुरक्षित करेगा। हमारे प्रजापिता पिता श्री ब्रह्मा बाबा के संकल्पों से ही हम आगे बढ़ रहे हैं। उन्हों का श्रेष्ठ संकल्प ही हमें ऐसे स्थान पर लाया, परमात्मा से शक्ति लेने का आधार बना। तो क्या हम कुछ बेहतर नहीं कर सकते? सभी आज दुनिया में अन्य तरह से सहयोग कर पाते हैं, लेकिन किसी को कहो कि आप थोड़ा बैठकर अच्छे संकल्पों का दान करें तो उनके पास टाइम नहीं होता। किसी को वाणी से कुछ समझा देना एक अलग चीज़ है। लेकिन श्रेष्ठ संकल्प करना, पूरे विश्व को एक जैसा सहयोग देना। हमारी तरंगें जब उनके पास पहुंचती तो बहुत बड़ा परिवर्तन होता। लेकिन परिवर्तन करने के लिए संकल्पों को इकट्ठा करना अति आवश्यक है।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

उदाहरण, जैसे सूरज की किरणों को इकट्ठा कर उससे अन्य कार्यों को अंजाम देते हैं। आज व्यर्थ हमारा इतना चलता है कि संकल्पों में बल नहीं है। छोटी-छोटी बातों का व्यर्थ संकल्प इतना है कि हमारी शक्ति नष्ट होती ही जा रही है। अगर हमें दूसरों के अन्दर शक्ति भरनी है, तो संकल्प का बल तो चाहिए ना! वाणी से हिम्मत आती तो है सबके अन्दर, लेकिन सदा काल नहीं रहती। वाणी के साथ-साथ श्रेष्ठ संकल्प की सूक्ष्म शक्ति हो, तो हमें सफलता अधिक से अधिक मिलती है। जितनी जो सूक्ष्म चीज़ है वो हमें ज़्यादा से ज़्यादा सफलता दिखाती है। उदाहरण, जैसे हाइड्रोजन बम या परमाणु बम जब ब्लास्ट करना होता है तो उसमें न्यूट्रोन के सबसे सूक्ष्म कण डाले जाते हैं। उसी प्रकार से किसी भी स्थूल कार्य की शुरुआत सूक्ष्म संकल्पों से होती है। उदाहरण, जैसे मुझे कल किसी को सामान पहुंचाना है, तो हम उसकी प्लानिंग एक दिन पहले रात को करते हैं और सोचते हैं कि कल सुबह उठके मुझे यह वाला काम करना है। इससे क्या सिद्ध होता है, कि सबसे पहले हमने संकल्प सूक्ष्म में किया और उसका परिणाम एक दिन बाद निकला। अब यह भी तो हम काम कर रहे हैं अपने शरीर के लिए।

वाणी से संकल्प सूक्ष्म होते हैं। जैसे इंजेक्शन के द्वारा शक्ति भर देते हैं, ऐसे एक संकल्प इंजेक्शन का कार्य करता है, जो अन्दर हमारी वृत्ति में शक्ति भर देता है। अब आप सोचो कि इतना सारा प्रकृति का परिवर्तन करना है, तमोगुणी संस्कारों को बदलना है। उसके लिए कितनी शक्ति की ज़रूरत है अगर हमें इतना विशाल कार्य करना है तो! इसलिए यह वर्ष परिवर्तन काल के वर्ष के रूप में क्यों न मनाएं। अभी अलबेले बनके चलने का समय नहीं रहा, अब हमको सच में नॉलेजफुल बन आगे बढ़ते जाना है। बढ़ेगी वही जो बहुत काल की शक्तिशाली आत्मा होगी, जिसके संकल्पों में श्रेष्ठता होगी। इसलिए शुद्ध संकल्पों की शक्ति का स्टॉक बहुत जमा करने की आवश्यकता है। आप इस शक्ति को जितना अनुभव में लाते जायेंगे उतनी आपकी सेवा भी फलीभूत होगी।

हम सभी को इस आधार से आगे बढ़ने का प्रयास करना है और इस नये वर्ष में श्रेष्ठ संकल्प लेने का संकल्प करना है और कुछ ऐसा करके दिखाना है जिससे परमात्मा हमसे पूरी तरह से सन्तुष्ट हो जाएं और इस विश्व के महान कार्य में हम सहयोगी बन जाएं। इन्हीं शुभ विचारों से खुद को भरें।

दबाव में सजग रहकर फैसले लेना सीखें

किसी काम को करते समय, कोई निर्णय लेते वक्त यदि आप बहुत दबाव में आ जाएं तब क्या किया जाए? दबाव के साथ ही काम करते रहें और लगातार दबाव बना रहा तो वह तनाव में बदल जाता है और लगातार तनाव डिप्रेशन में पटक सकता है।

इस स्थिति से पहले ही चरण में मुक्ति पा लीजिए। जैसे ही दबाव आए, थोड़ा रुककर, आपकी जो सोचने समझने की प्रक्रिया चल रही होगी, उसको पांच चरण में बांट दें। चार तो स्पष्ट चरण होंगे और पांचवें में आपको क्रियान्वित करना होगा।

पहला चरण होगा सोच- इसमें चिंता झलकती है, एक फिक्र उतर आती है,, कभी कभी पछतावा भी होता है। दूसरा होता है विचार - इसमें हम हमारे शब्दों की जांच पड़ताल करने लगते हैं। फिर जब इन दोनों को क्रॉस करते हैं तो चिंतन शुरू हो जाता है। इसमें एक फिलॉसफी होती है। आप थोड़े परिपक्व हो चुके होते हैं और यहीं से स्वयं को राय देते हैं तथा दूसरों की सलाह लेने लगते हैं।

तो सोच, विचार, चिंतन और राय...थोड़ा सा दूर खड़े होकर इन चारो को देखना और उसके बाद करिएगा मंथन। किसी नवीन तत्व को खोजने के लिए जो परिश्रम किया जाता है वह मंथन है।

जब इन चारो का मंथन करेंगे तो आपके हाथ एक समाधान लगेगा जो कह रहा होगा कि सबसे पहले दबाव से मुक्त हों। जो होना है, वह होकर रहेगा, लेकिन उसके लिए परिश्रम नहीं छोड़ना है।

एक मस्ती, एक बेफिकरी रखो और पूरी सजगता के साथ निर्णय ले डालो। यह होगा मंथन का परिणाम और यहीं से आप दबावमुक्त हो जाएंगे।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

परमात्म वरदानों से अपना सबकुछ सफल कर उनके समान बनो

मन की बातें

- राजयोगी ब.कु. सूर्य

प्रश्न : बाबा अपने महावाक्यों में कहते हैं कि अपने श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में रखो तो सदा खुश रहेंगे। हम ब्रह्मावत्सों का सर्वश्रेष्ठ भाग्य क्या है? कृपया विस्तार से समझाइये।

उत्तर : हमने भगवान के पास जन्म लिया, भगवान के घर में जन्म लिया, जन्म लेते ही हम भगवान की गोद में आ गये... यहीं से शुरू होती है हमारे श्रेष्ठ भाग्य की कहानी! जैसे कोई राजा के घर जन्म ले तो उसे भाग्यवान कहेंगे, वैसे ही भगवान के घर जन्म लेने वाले श्रेष्ठ भाग्य के धनी हैं, इसे याद रखें। भगवान ही हमारी पालना कर रहे हैं, पढ़ा रहे हैं, गाइड कर रहे हैं। लोग मुक्ति के लिए क्या-क्या तपस्या करते हैं और हमारे लिए मुक्ति व जीवनमुक्ति वरदान ही बन गये। याद करें इस सर्वश्रेष्ठ भाग्य को। भगवान स्वयं हमारे लिए राजाई की सौगात ले आये हैं। हमारे साथी बन गये हैं। इससे बड़ा भाग्य और क्या हो सकता है। सद्गुरू बनकर वे हमें शक्तियां व वरदान दे रहे हैं। सोचो भगवान हमारा हो गया, वह हमारा सम्बन्धी बन गया। अपने भाग्य को देखकर खुशी में नृत्य करो, आनंदित होकर गीत गाओ।

हम ऐसी भाग्यवान आत्माएं हैं, भगवान, भाग्यविधाता स्वयं जिनके भाग्य की रेखाएं खींच रहे हैं। जो योगी हैं, जो पवित्र हैं, जो भगवान के काम आ गये, जिन्हें दिव्य बुद्धि प्राप्त हुई, जिन्हें 2500 वर्ष तक धन कमाना ही नहीं पड़ेगा। ऐसा भाग्य हमारे द्वार पर आया है। सवेरे उठकर इन्हें याद करें।

प्रश्न : बाबा ने कहा कि परमधाम में शिवबाबा के साथ जाने के लिए बाप समान सम्पन्न व सम्पूर्ण बनो। सम्पूर्ण बनने का अर्थ स्पष्ट करें।

उत्तर : जो शिवबाबा के साथ घर चलेंगे, उन्हें धर्मराजपुरी में रुकना नहीं पड़ेगा। जो यहाँ से पूर्णतया बंधनमुक्त व निर्मोही बन जायेंगे, वही बाप के साथ घर चलेंगे। सम्पन्न बनने का अर्थ है सर्व खज़ानों से भरपूर। वे खजाने हैं -ज्ञान का खज़ाना, गुणों व शक्तियों का खज़ाना, समय व श्वासों का खज़ाना, पवित्रता का खज़ाना, स्वमान का खज़ाना, खुशी का खज़ाना, पुण्य कर्म व श्रेष्ठ संकल्पों का खज़ाना तथा दुआओं का खज़ाना। इस सभी खज़ानों से स्वयं को भरपूर अनुभव करें। प्रत्येक आत्मा की सम्पूर्णता की डिग्री अलग-अलग हैं। कोई 90 डिग्री पर सम्पूर्ण हैं तो कोई 80 डिग्री पर। इस तरह नीचे वाली आत्माएं 5 से 10 डिग्री तक। सबने अपनी शक्तियां यूज़ कर ली हैं। अब योगबल, ज्ञान बल व पवित्रता के बल से अपनी मूल स्थिति तक पहुंचना सम्पूर्ण बनना है।

प्रश्न : बाबा अपने महावाक्यों में मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर बैठो - ऐसा बहुत कहते हैं। कैसे बैठें इस सीट पर तथा इस सीट पर बैठकर शक्तियों का आह्वान कैसे करें?

उत्तर : बाबा ने देखा कि मेरी सब महानात्माएं माया से पूरी तरह हार खा चुकी हैं, इसलिए माया पर विजयी बनाने के लिए उसने अपनी शक्तियां हमें दे दीं। हम विश्वास कर लें कि सर्वशक्तिवान की शक्तियाँ मेरे पास हैं इसलिए मैं हूँ मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् सर्व परमात्म शक्तियों से सम्पन्न व शक्तियों का मालिक। सीट पर बैठना माना स्मृति स्वरूप होना, याद रखना अथवा नशे में रहना। तो हम इस तरह स्वमान में रहें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, परमात्म शक्तियां मेरे पास हैं, मैं इन शक्तियों का मालिक हूँ, ये शक्तियां मेरा श्रृंगार हैं। ये शक्तियां अब मेरी हैं। ऐसे नशे में रहने से शक्तियां जागृत रहेंगी, अन्यथा वे सुषुप्त अवस्था में रहती हैं। ये है स्वमान की सीट पर बैठना। सवेरे उठकर सकंल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मेरे पास सम्पूर्ण सहनशक्ति है तो सहनशक्ति सारा दिन काम करती रहेगी। मेरे पास सम्पूर्ण निर्णय शक्ति है तो सहज ही यथार्थ निर्णय होते रहेंगे। मेरे पास सामना करने की शक्ति है तो सहज ही माया या परिस्थितियों का सामना करेंगे। इसे कहते हैं शक्तियों का आह्वान करना। इस तरह मास्टर सर्वशक्तिमान के नशे में रहकर किसी भी शक्ति का आह्वान किया जा सकता है।

प्रश्न : अमृतवेला वरदानी वेला है, परंतु हमारा यह समय साधारण बीत जाता है, कुछ सहज युक्ति हमें बताएं ताकि हम इसे आनंदित कर सकें।

उत्तर : जबकि सारा संसार सोया रहता है तब हम पर भी नींद के वायब्रेशन्स का प्रभाव रहता है। स्वयं को फ्रेश करें, चारपाई छोड़ें, घूमें फिरें, ऊपर की ओर देखें। सुंदर संकल्प करें। यह शुरुआत इस समय को सफल करेगी। आप खुशी, नशे व अपने महान कर्त्तव्यों की स्मृति के संकल्पों से स्वयं को चार्ज करें। हो सके तो दस मिनट अव्यक्तवाणी सुनें या पढ़ें। तात्पर्य यह है कि ब्रेन को जागृत करें, संकल्प करें, मैं विश्व में पद्मापदम भाग्यवान हूँ। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं पूर्वज हूँ, मेरे सकाश की संसार को बहुत-बहुत ज़रूरत है। मुझे बाबा की आशाओं को पूर्ण करना है। मैं लाइट हाऊस हूँ, ऐसे श्रेष्ठ संकल्प दस मिनट तक करें।

अमृतवेले के लिए कुछ प्लानिंग हो। रात्रि को ही ये संकल्प करके सोयें कि उठकर मुझे चार काम करने हैं। प्रथम पाँच स्वरूपों का अभ्यास (तीन बार) फिर रूहानी ड्रिल (तीनों लोकों में जाना) तीन बार, फिर बीजरूप स्थिति और फिर सकाश देनी है। अन्य कुछ भी प्लानिंग कर सकते हैं, सूक्ष्म वतन में जाकर बाबा का वरदानी हाथ सिर पर लेना है, उनसे दृष्टि लेनी है, सच्चे दिल से उनका शुक्रिया करना है। इस तरह यह वरदानी समय सफल होगा। याद रहे... रात्रि को ही प्लानिंग करना आवश्यक है। उठते ही गीत भी सुन सकते हैं।

प्रश्न : बाबा हमें बाप समान बनने की व तीव्र पुरूषार्थ करने की बार-बार प्रेरणा दे रहे हैं। हम जानते हैं कि यह काम कठिन है। कोई सहज पुरूषार्थ की विधि जानना चाहेंगे।

उत्तर : यह सम्पूर्ण सत्य है कि अष्ट रत्न ही बाप समान बनते हैं, फिर सौ आत्माएं उनके समीप स्थिति तक जाती हैं। परन्तु हमें इस रेस में शामिल अवश्य होना है। आप पहला लक्ष्य बनायें कि मुझे योग का चार्ट चार घंटे तक पहुँचाना है। दूसरी बात - स्वमान का ज़्यादा अभ्यास करना है। आप अपने लिए कोई भी पांच स्वमान चुन लें और उनका बहुत अभ्यास करें। इससे देह भान व व्यर्थ संकल्प समाप्त होते जायेंगे। तीसरी बात - पवित्रता व निरहंकारिता पर ध्यान दें। पवित्रता में बहुत बड़ा सुख है इसे प्राप्त करते चलें। चौथी बात - यज्ञ व बाबा के लिए समर्पित भाव अपनायें, बस ये चार पुरूषार्थ करने से आप बाप समान बनते जायेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

OM -19- 2018 FINAL_Page 1 and 2 12/10/2018 9:30 AM Page 11

ईश्वराधिकृत निमित्त - प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

विश्व रंगमंच पर हर एक्टर का पार्ट भिन्न भिन्न है। एक न मिले दूसरे से। इसी चलते कालचक्र में कई ऐसे पात्रों ने भी अपना रोल अदा किया जो अन्य के लिए प्रेरणास्रोत बन गये। इतना ही नहीं, उन्होंने कइयों के जीवन की राह को आसान बनाने में भी अपना योगदान दिया। वे न सिर्फ अपने लिए, बल्कि औरों के लिए जिये। ऐसे ही इस रंगमंच पर हमने श्रीकृष्ण, श्रीराम, बुद्ध, महावीर आदि कई अलौकिक पुरुषों को देखा है। पर सृष्टि के कालचक्र के अंत में ऐसा समय आता है, जहां इन महान पुरुषों के बताये गये मार्ग भी हमें अप्रासंगिक लगने लगते हैं। तभी तो ईश्वर का आगमन इस धरा पर होता है और वे एक साधारण मनुष्य का आधार लेकर हमें सही राह दिखाते हैं। उसका नाम दादा लेखराज, जो ईश्वराधिकृत निमित्त बने, उन्हें ही ईश्वर ने प्रजापिता ब्रह्मा नाम दिया।

अलौकिक पुरुषों की जो भी कसौटियां हो सकती हैं, वे दादा लेखराज पर पूरी खरी उतरती हैं। उनका पूरा जीवन वृत्तांत दरअसल, परमात्म-सत्ता के रूपायित होने और परमात्म-कार्य को सम्पन्न करने की ही कथा है। 1876 में सिंध में वैष्णव कृपलानी परिवार में जन्मे दादा लेखराज बचपन से वृद्धावस्था तक एक साधारण ईश्वर भक्त के रूप में ही कार्य-व्यवहार करते रहे। उनका जवाहरात का व्यवसाय था। वे बोलने में मधुर और दिखने में आकर्षक थे। वे राजा-महाराजा और रईसों को पसंद थे। इस कारण उनका व्यवसाय खूब चलता था।

एक सुखी गृहस्थ के रूप में दादा लेखराज के पास सब कुछ था। सुखी और बड़ा परिवार, बेटा-बहू, धन-जायदाद और समाज में सम्मान। एक गुरू भी थे, जिनकी सेवा-चाकरी वे पूरी श्रद्धा से करते थे। उन्हें ईश्वर के प्रति लगाव था। वे पूजन-भजन भी करते थे और दान-दक्षिणा में कभी कंजूसी नहीं करते थे।

आकस्मिक परिवर्तन

1936 के आसपास, जब उनकी आयु साठ वर्ष की हो चुकी थी, उनमें अचानक ही परिवर्तन आया। यह परिवर्तन एकदम आकस्मिक था। एक तरफ तो, कहाँ वे धन कमाने के कारण व्यवसाय से उपराम होने की सोच ही नहीं रहे थे और वहीं दूसरी तरफ, अब उनका मन व्यवसाय से उचटने लगा था। उनको अब एकांत अच्छा लगता था। ऐसा क्यों हो रहा है, उन्हें कुछ समझ नहीं पड़ता था। पर वे जानते थे कि उनका मन जैसे संसार से मुड़कर कहीं अन्य स्थिति में रमने लगा है। ऐसी दोहरी दशा में ही एक दिन जब वे बॉम्बे में एक मंदिर में चल रहे सत्संग में बैठे थे, उनका मन एकाएक अशरीरी हो गया। उस हालत में वे सत्संग से उठकर वहीं सामने मकान के एक कमरे में एकांत में बैठ गये। उस समय उनकी भाव-दशा कुछ वैसी ही थी जिसे भावाविष्ट भी कहा जा सकता है। इसी दशा में उन्हें, उस एकांत कमरे में, चतुर्भुज विष्णु का साक्षात्कार हुआ।

दादा लेखराज जब इस भाव-दशा से बाहर आये तब वे कौतुहल से भरे हुए थे। उन्हें इस तरह की भावाविष्ट दशा भी पहले-पहले हुई थी। साक्षात्कार भी पहली बार ही हुआ था। उन्होंने कभी ऐसा चाहा या मांगा नहीं था। उन्होंने अपने आसपास भी ऐसा होते नहीं देखा था। यह उनके लिए अनोखा, किन्तु आनंददायक अनुभव था। उन्होंने यह घटना अपने गुरू को बताई और इस बारे में मार्गदर्शन चाहा। पर उनके गुरू इस घटना को समझ नहीं पाये।

परमात्मा ने कराये साक्षात्कार

इस प्रथम साक्षात्कार के बाद फिर ऐसी ही अनचाही, आकस्मिक घटनाओं का सिलसिला शुरू हो गया। उन्हें विभिन्न देवताओं तथा निराकार प्रकाश-स्वरूप शिव परमात्मा के साक्षात्कार हुए। उन्हें विश्व में हो रही घटनाओं तथा आगे होने वाली घटनाओं के भी दर्शन हुए तथा उनकी आगामी भूमिका के बारे में अव्यक्त ढंग से भान हुआ। उन्होंने सारी सृष्टि का सनातन चक्र भी देखा। शिव, गीता और कल्प-वृक्ष में परिभ्रमण करती आत्माओं का यह ज्ञान कुछ ऐसा था, जो अब तक बताये गये ज्ञान एवं जानकारियों से भिन्न था।

आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध का ज्ञान भी नितांत नया था। दादा लेखराज, उन्हें जो हो रहा था, उसे मिथ्या कहकर न तो छोड़ सकते थे, ना उस दर्शन को अमान्य कर सकते थे, जिसे उन्होंने ज्ञान के रूप में पाया था और अनुभव किया था।

ईश्वरीय रंग में रंगे दादा लेखराज

ज्ञान की इस गंगा में नहाकर दादा लेखराज अब पूरी तरह बदल चुके थे। उनमें आया परिवर्तन एकदम रूहानियत से भरा हुआ था। जो लोग उनको जानते थे, उनके लिए दादा अब बिल्कुल बदले-बदले लगते थे। बोल, व्यवहार, चाल सभी कुछ बदल चुका था। उन्होंने जो ज्ञान पाया था वह प्रचलित ईश्वरीय ज्ञान से भिन्न था। पर दादा लेखराज जिस अधिकार भरी वाणी में उसे बताते थे, उससे लगता था कि उन्हें अपने ज्ञान पर तनिक भी संदेह नहीं है। 1936-1937 में अपने इस अनुभव एवं बोध के बाद उन्होंने अपने को शिव परमात्मा प्रदत्त अपनी ब्रह्मा की भूमिका के लिए सौंप दिया। उनका यह ज्ञान-यज्ञ 'ओम मंडली' से प्रारंभ होकर 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' में रूपांतरित हुआ और सतत् विस्तार पाता रहा। 18 जनवरी 1969 को उनके देह से अव्यक्त होने के बाद भी आत्माओं को पवित्र एवं दिव्य गुणों से सम्पन्न बनाकर नव-विश्व का सृजन करने के लिए प्रारंभ हुआ यह यज्ञ अब भी जारी है और वे ही अब भी ज्ञान-यज्ञ के सूत्रधार हैं।

बाबा में दिखा चुम्बकीय आकर्षण

वह देह, जिसमें परमात्म-सत्ता आई हो या उसे संस्कारित करके गई हो, चुम्बक की तरह अपने पास आने वाले लौह-कणों में स्फुरण पैदा किये बिना नहीं रहती। यह उसका एक तरह से नैसर्गिक गुण हो जाता है। हमने, आपने इतने अनुभव प्रसंग पढ़े-सुने या देखे हैं, उनमें ऐसा सदा ही हुआ कि परमात्मा की लय में नाचा व्यक्ति अपने पास आये व्यक्ति में नाच पैदा करता नहीं, वह तो स्वतः हो जाता है। ऐसे बुद्ध पुरुषों के प्रभाक्षेत्र में प्रवेश करते ही आपको बदलाव महसूस होने लगता है। दादा लेखराज के पास जाते ही स्त्री, पुरुष तथा बालक उनकी दृष्टि पाते ही भावाविष्ट हो जाया करते थे। ऐसे अनेकों लोग अभी हैं जो यह बताते हैं कि उन्हें दादा के पास जाने पर भिन्न-भिन्न रूपों अथवा लोकों के साक्षात्कार हुए। उनसे मिलकर आया हुआ शायद ही कोई ऐसा हो, जो यह न कहे कि यह व्यक्ति तो अनूठा है। महसूस करने की इसी स्थिति को संभवतः रूहानियत या भागवत अनुभव कहा जाता है।

अनुभव से चले, व्याख्यान से नहीं

रूहानियत या भागवत अनुभव का एक अन्य रूप भी है। अब तक यही अनुभव है कि जिसने अनुभव किया हो, ऐसे व्यक्ति के पीछे ही लोग अनुभव पाने के लिए चले हैं। अनुभव पाने वालों का किस्सा सुनाने वालों अथवा उनकी व्याख्या करने वाले पंडितों या व्याख्याकारों के पीछे जमातें नहीं चलीं। यदि चलीं भी तो कुछ दूर या देर तक ही। कारण, शायद यही रहा होगा कि जिसने स्वयं ही नहीं जाना, वह बतायेगा भी क्या! फिर, जिन्होंने जाना उनमें से भी ज़्यादातर लोग तो मौन हो गये।

ईश्वर ने अपने कार्य हेतु चुना दादा लेखराज को

दादा लेखराज न तो शास्त्रों के ज्ञाता थे, न तो भाषा के विद्वान। उन्होंने तो उस परमात्म-सत्ता को जाना भर था और परमसत्ता ने ही उन्हें युगनिर्माण के कार्य के लिए चुना। इस तरह से वे ईश्वराधिकृत निमित्त थे। इसलिए लोग उनसे जानने के लिए उनके पास जमा हो गये। उन्होंने भी अपनी साधारण बोलचाल की भाषा में ही उस ईश्वरीय ज्ञान को साधिकार बताया जिसे बताने में सामान्यतः भाषा भी डगमगाने लगती है। इस रूप में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उनके माध्यम को परमात्म सत्ता ने अपने कार्य का निमित्त बनाया था। इसी भूमिका के बारे में तो गीता का वचन है - 'यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।' रामचरित मानस में इसे इस तरह बताया गया है - 'जब-जब होई धर्म की हानि, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी, तब-तब प्रभु लै मनुज शरीरा, हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा'।

इसी भूमिका के लिए निमित्त बने दादा लेखराज ने अपनी वाणी से इस ज्ञान की गंगा में जिनको भी सराबोर किया, वे फिर लौटकर नहीं गये। 1937 से प्रारंभ हुआ यह ज्ञान-यज्ञ कभी कमज़ोर नहीं पड़ा, वरन् लगातार ज्ञान-पिपासुओं को आकर्षित करता रहा है। यह भी एक बड़ी कसौटी है जिस पर दादा लेखराज कई महापुरुषों में आगे खड़े दिखाई पड़ते हैं। दादा लेखराज ने जब सर्वप्रथम ज्ञानामृत-पान किया था, तब अपने एक पत्र में अपने घरवालों को लिखा था - 'पा लिया वह सब, जो पाना था। अब कुछ बाकी नहीं रहा'।

उनके इस ज्ञान से नहाये लोग भी अब यही कहते हैं- 'पा लिया जो पाना था, अब कुछ शेष नहीं'। यही सच्चे अनुभव की कसौटी है।

मलेशिया। डेंगकिल के एशिया रिट्रीट सेंटर पर तीसरे इंटरनेशनल तमिल रिट्रीट 'डेवलपिंग वैल्यूज़ फॉर सेल्फ ट्रांसफॉर्मेशन एंड पॉज़ीटिव एम्पॉवरमेंट' के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुंदर्शन बहन,तमिलनाडु, ब्र.कु. लेचु, ब्र.कु. गणेश,श्रीलंका तथा विभिन्न देशों से आये ब्र.कु. भाई बहनें।

आगरा-उ.प्र.। हस्त शिल्प मेले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी में पुलिसकर्मियों को प्रदर्शनी समझाते हुए ब्र.कु. बहन।

OM -19- 2018 FINAL_Page 1 and 2 12/10/2018 9:30 AM Page 12

राजयोग मेडिटेशन से होता सबल मन

उद्घाटन अवसर पर ईश्वरीय स्मृति में राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, राज्यपाल महोदया द्रौपदी मुरमू, पद्मश्री डॉ. तुलसी मुण्डा, ब्र.कु. दुर्गेश तथा अन्य।

बेतनटी-ओडिशा। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'सद्भावना भवन' के उद्घाटन अवसर पर 'समस्या समाधान व राजयोग अनुभूति समारोह' तथा 'त्रिदिवसीय योगभट्ठी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर माउण्ट आबू से आये राजयोगी ब्र.कु. सूर्य ने 'सर्व समस्याओं का समाधान राजयोग' विषय पर सभी का ध्यान आकर्षित करते हुए बताया कि कैसे हम राजयोग के अभ्यास से अपने मन को शक्तिशाली बनाकर समस्याओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

मुख्य अतिथि झारखण्ड की राज्यपाल महोदया द्रौपदी मुरमू ने अपने जीवन की अनुभूतियों के आधार पर बताया कि कैसे परमात्मा का ध्यान व उनके साथ से हमारा जीवन सुखमय हो जाता है।

पद्मश्री डॉ. तुलसी मुण्डा ने भी अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि स्वयं की सत्य पहचान द्वारा आत्मनिष्ठा, सर्व की भलाई सोचने और करने से ही समस्या समाधान का सहज रास्ता हम पा सकते हैं।

कार्यक्रम में अन्य अतिथियों ने भी अपने अपने विचार व्यक्त किये। ब्र.कु. दुर्गेश बहन ने सभी को राजयोग की गहन अनुभूति कराई। ब्र.कु. बनिता ने मंच संचालन किया। कार्यक्रम में करीब एक हज़ार लोगों ने भाग लिया और इसकी सराहना करते हुए आगे भी ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन किये जाने की इच्छा जताई।

सुस्वास्थ्य हेतु सुबह जल्दी उठना ज़रूरी

दीप प्रज्वलित करते विधायक अभय सिंह, ईला बा, ब्र.कु. राज दीदी, महारानी तनवीर, ब्र.कु. गंगाधर, ब्र.कु. मोनिका, ठाकुर जयदीप व अन्य।

गढ़बोरियाद-गुज.। आज चारो ओर व्यक्ति भय के वातावरण में जी रहा है। किसी को व्यापार में घाटे का डर, किसी को धन के खो जाने का डर, किसी को परीक्षा में फेल होने का डर, किसी को कुर्सी चले जाने का भय। ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ निर्भय जीवन कैसे जीया जाये, इसके बारे में शिक्षा दे रही है, ये बनायें। साथ ही कहा कि शरीर के स्वास्थ्य के लिए थोड़ा सा व्यायाम को जीवन का हिस्सा बनायें। उन्होंने जीवन को सफल बनाने के लिए राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास ज़रूरी बताया। राजयोग मेडिटेशन न सिर्फ हमारे तन को स्वस्थ रखता है, बल्कि मन को भी सबल बनाता है। यहां के विस्तार में ब्रह्माकुमारीज़

- सेवाकेन्द्र का तृतीय वार्षिकोत्सव मनाया हर्षोल्लास के साथ
- माउण्ट आबू से आये प्रसिद्ध गायक ब्र.कु. नितिन ने सुंदर गीतों की प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया
- सत्यम् शिवम् सुंदरम्... गीत पर झूमे गांव वासी

सराहनीय है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ के गढ़बोरियाद सेवाकेन्द्र के तीसरे वार्षिकोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. गंगाधर, सम्पादक, ओमशान्ति मीडिया,माउण्ट आबू ने व्यक्त किये। उन्होंने जीवन को सुरक्षित और शांतमय बनाने के लिए मनुष्य को अपनी जीवनशैली को व्यवस्थित करने को कहा। सुबह सुबह अच्छे विचारों से अपने मन को ऊर्जावान द्वारा की जा रही मानवता की सेवा के लिए बहुत बहुत बधाई देते हुए इसे प्रशंसनीय कार्य बताया। ये यहां के गांव के लिए बहुत बड़ा उपहार है। सभी इसका लाभ लें।

विधायक अभय सिंह तडवी ने बताया कि इस क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दी जा रही शिक्षाएं अनुकरणीय हैं। समाज के हर वर्ग और क्षेत्र का विकास करना और सबके जीवन को उत्कृष्ट बनाना ही हम सबका उद्देश्य है। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ के साथ मिलकर समाज के हित में कार्य करने की प्रतिबद्धता जताई।

क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. राज दीदी ने सभी को आध्यात्मिक शिक्षाओं को अपनाने पर ज़ोर दिया और कहा कि इस समय परमात्मा हम सबको दुःख से मुक्त कराने के लिए कार्य कर रहे हैं। हम इन कार्यों में अपना भी सहयोग कर विश्व को दुःख अशांति से मुक्त करने में सहयोग करें।

छोटा उदेपुर की महारानी तनवीर जी, ठाकुर जयदीप सिंह तथा गढ़बोरियाद की राजमाता ने भी अपनी शुभकामनाएं दीं। ब्र.कु. मोनिका, ब्र.कु. धीरज,बड़ौदा, ब्र.कु. सीमा,पादरा ने भी अपने विचार रखे।

सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुधा ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन ब्र.कु. मीनेष ने किया। कार्यक्रम का आयोजन गढ़बोरियाद की हवेली में किया गया जहां गांव के सभी लोगों ने लाभ लिया।

आध्यात्मिकता से ही जीवन में रहेगी शांति - रामदास जी

टोंक-राज.। मांडव ऋषि की तपोभूमि लघु पुष्कर मांडकला पर आयोजित कार्तिक पूर्णिमा मेले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन श्री श्री 1008 रामदास जी महाराज के द्वारा किया गया।

इस प्रदर्शनी में श्रद्धालुओं को चित्रों के माध्यम से स्वयं की व परमपिता परमात्मा की पहचान दी गई, जीवन की सच्ची यात्रा सिखाई गई, मनुष्य जीवन की कहानी बताई गई, मनुष्य जीवन के श्रेष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग बताया, जीवन में आध्यात्मिकता का समावेश कर श्रेष्ठ जीवन जीने की कला सिखाई गई तथा बताया गया कि मन रूपी मानसरोवर में हमेशा श्रेष्ठ और पवित्र विचारों के कमल खिला कर ही जीवन में सुख शांति का अनुभव कर सकते हैं। प्रदर्शनी में श्रद्धालुओं ने आध्यात्मिकता को अपने जीवन में उतारने का निश्चय किया।

मौके पर ब्र.कु. पूनम, ब्र. कु. ऋतु, ग्राम विकास विभाग के जिला संयोजक ब्र.कु. प्रहलाद, ब्र.कु. अमृत, ब्र.कु. पांचू, सुरेश कुमार, रुक्मणि माता, लल्ली माता सहित अनेक ब्र.कु. भाई बहनों द्वारा प्रदर्शनी समझाई गई।

मेरा शहर साफ, मेरा भी उसमें हाथ

ग्वालियर। ब्रह्माकुमारीज़ एवं नगर निगम ग्वालियर के संयुक्त तत्वाधान में एक विशाल पैदल स्वच्छता जागरुकता रैली का आयोजन किया गया जिसको हरी झंडी नगर निगम से शिशिर श्रीवास्तव, ब्र.कु. गुप्ता, अनिल उपाध्याय एवं ब्रह्माकुमारी संस्थान से ब्र.कु. आदर्श बहन ने दिखाकर प्रारंभ किया।

सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. आदर्श बहन। मंचासीन हैं उपायुक्त देवेन्द्र सुंदरियाल, गिरीश शर्मा, ब्र.कु. प्रहलाद तथा अतिथिगण।

इस रैली का उद्देश्य जन जन को स्वच्छता के प्रति जागरुक करना था। रैली में भिन्न भिन्न स्लोगन के माध्यम से सभी को स्वच्छता को बनाकर रखेंगे। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति 21 व्यक्तियों को तथा वह 21 व्यक्ति अलग 21 व्यक्तियों को स्वच्छता के प्रति जागरुक करने का संकल्प लें। इस तरह यदि हम स्वच्छता के प्रति अपने कदम आगे बढ़ायेंगे तो दूसरे भी हमारे साथ जुड़ जायेंगे।

उपायुक्त एवं नोडल अधिकारी स्वच्छता मिशन देवेन्द्र सुंदरियाल ने कहा कि दुनिया के सभी धर्म में हर प्रकार की स्वच्छता को मान्यता दी गई है। इसलिए हम सभी मिलकर स्वच्छता को बनाये रखने में सहयोग करें। इस अवसर पर गिरीश शर्मा,स्वच्छता ब्रांड एम्बेसडर, शैलेष अवस्थी, नोडल ऑफिसर, सबा रहमान, ब्रह्माकुमारीज़ के सैंकड़ों भाई एवं बहनों सहित नगर निगम ज़ोनल ऑफिसर भदौरिया, राकेश कुशवाहा एवं अन्य नगर निगम के अधिकारी भी मौजूद रहे। साथ ही सुनील खरे, कमल, प्रेम सहित अनेकानेक सफाई दूत भाई भी शामिल रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी को ब्र.कु. प्रहलाद द्वारा स्वच्छता की शपथ दिलाई गई।

गुणवत्ता युक्त उत्पादकता हेतु शाश्वत यौगिक खेती को बढ़ावा दें

बोकारो-झारखण्ड। ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा अलग अलग क्षेत्रों में शाश्वत यौगिक खेती की जानकारी देने हेतु 'किसान सशक्तिकरण अभियान' का शुभारम्भ झारखंड के बोकारो स्टील सिटी से किया गया। अभियान के अंतर्गत प्रदेश के चारो दिशाओं से चार दिव्य किसान सेवारथ अलग अलग क्षेत्रों के लिए रवाना किए गए। इस अभियान में ब्रह्माकुमारी बहनें मार्ग में आने वाले गांवों, कस्बों एवं शहरों में कार्यक्रम आयोजित कर किसान एवं ग्रामीण जनों को स्वस्थ और स्वच्छ जीवन के लिए सकारात्मक चिंतन को अपनाने तथा राजयोग द्वारा व्यसनमुक्ति, मूल्य शिक्षा एवं तनावमुक्त खुशहाल जीवन की जानकारी देंगे।

माउण्ट आबू से आए ब्र.कु. राजू ने उपस्थित युवाओं को ये संकल्प दिलाया कि वे शाश्वत यौगिक खेती के लिए आगे आएं तथा किसानों एवं देश के लिए कल्याण का कार्य करें।

कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. राजू, कृषि मंत्री रणधीर कुमार सिंह, विधायक बिरंची नारायण, ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।

ब्र.कु. तृप्ति, नेशनल कोऑर्डिनेटर, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग ने कहा कि समस्त मानव जाति के सुस्वास्थ्य के लिए किसान शाश्वत यौगिक खेती का प्रयोग करें। ये किसानों के लिए लाभदायक है।

मुख्य अतिथि रणधीर कुमार सिंह, कृषि मंत्री झारखंड ने किसान सशक्तिकरण हेतु प्रयास की सराहना की तथा इस कार्य में हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

विशिष्ट अतिथि विधायक बिरंची नारायण ने विज्ञान और अध्यात्म के माध्यम से जीवन जीने को प्रेरित किया और डेंटम वॉल बनवाने के लिए अपने वायदे को सरकार के समक्ष रखने की बात कही।

सभी गणमान्य नागरिक और सैंकड़ों किसान भाइयों-बहनों ने ब्रह्माकुमारीज़ के इस सराहनीय प्रयास की भरपूर प्रशंसा की।

बोकारो सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम ने अतिथियों एवं भाई बहनों को धन्यवाद दिया।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 12th Dec 2018
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।